गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 046
दि. 15.06.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

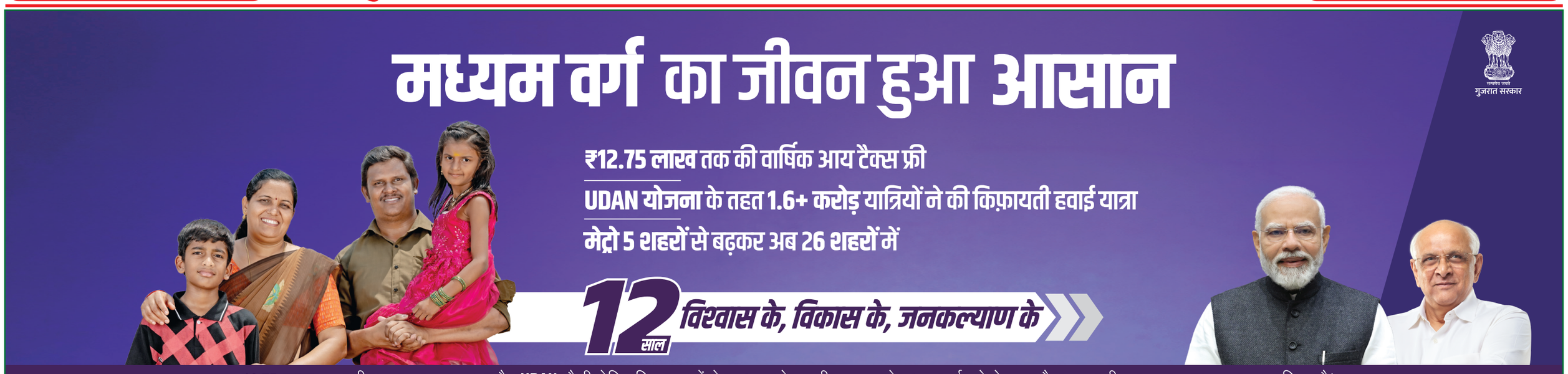

आस्था का सफर मातम में बदला, कुएं में समाई श्रद्धालुओं से भरी पिकअप; 14 जिंदगियां बुझीं, पूरे गांव में पसरा सन्नाटा

सोलापुर/पंढरपुर। रविवार का दिन महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के लिए ऐसी त्रासदी लेकर आया, जिसने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया। भगवान के दर्शन कर घर लौट रहे श्रद्धालुओं का सफर कुछ ही क्षणों में मौत के सफर में बदल गया। मालशिरस तालुका के तांडलवाड़ी गांव के समीप श्रद्धालुओं से भरी एक पिकअप वैन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे स्थित गहरे कुएं में जा गिरी। हादसा इतना भयावह था कि महिलाओं और बच्चों सहित 14 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो लोग किसी तरह बच निकलने में सफल रहे। घटना के बाद पूरे इलाके में चीख-पुकार मच गई और देखते ही देखते खुशियों से भरा धार्मिक यात्रा का माहौल शोक और मातम में बदल गया। बताया जाता है कि पंढरपुर तालुका के रंजनी गांव के निवासी श्रद्धालु रविवार को म्हसवाड स्थित प्रसिद्ध सिद्धनाथ मंदिर में दर्शन के लिए गए थे। मंदिर में पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करने के बाद सभी लोग एक पिकअप वाहन में सवार होकर अपने गांव लौट रहे थे। वाहन में महिलाएं, पुरुष और बच्चे बड़ी संख्या में मौजूद थे। किसी को अंदाजा भी नहीं था कि घर पहुंचने से कुछ ही दूरी पहले उनका सामना ऐसी भयावह दुर्घटना से होने वाला है, जो कई परिवारों को हमेशा के लिए उजाड़ देगी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार तांडलवाड़ी गांव के समीप पहुंचते ही अचानक वाहन चालक का नियंत्रण पिकअप से हट गया। सड़क के किनारे पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था नहीं होने और कुएं के चारों ओर मजबूत घेराबंदी न होने के कारण वाहन सीधे पानी से भरे कुएं में जा गिरा। पिकअप के कुएं में गिरते ही तेज धमाके जैसी आवाज सुनाई दी और आसपास के लोग घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े। कुछ ही पलों में वहां अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

स्थानीय ग्रामीण सबसे पहले राहत कार्य में जुटे। कुएं के भीतर से मदद की गुहार और चीखें सुनाई दे रही थीं। ग्रामीणों ने बिना समय गंवाए रस्सियों और स्थानीय संसाधनों की मदद से बचाव अभियान शुरू किया। सूचना मिलते ही पुलिस, प्रशासन और आपदा राहत दल भी मौके पर पहुंच गए। इसके बाद बड़े पैमाने पर बचाव और राहत कार्य शुरू किया गया।

घटना की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कुएं से एक-एक कर शव निकाले जाने लगे। मृतकों में महिलाएं और छोटे बच्चे भी शामिल थे। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार चार महिलाएं और चार बच्चों

की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि कुछ अन्य रिपोर्टों में बच्चों की संख्या इससे अधिक बताई जा रही है। कई परिवारों के एक से अधिक सदस्य इस हादसे का शिकार हुए हैं, जिससे गांव में शोक की लहर और गहरी हो गई है।

राहत कार्य के दौरान मौजूद लोगों ने बताया कि दुर्घटना के बाद का दृश्य बेहद दर्दनाक था। कुएं के आसपास परिजनों की चीखें गूंज रही थीं। कई लोग अपने प्रियजनों की तलाश में इधर-उधर भागते नजर आए। जैसे-जैसे शव बाहर निकाले जाते गए, वहां मौजूद लोगों का दर्द और बढ़ता गया। कई महिलाओं की हालत रो-रोकर खराब हो गई, जबकि बच्चों के परिजन बदहवास होकर अपने परिजनों को पुकारते रहे।

प्रशासन ने मृतकों के शवों को बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। साथ ही घायलों को तत्काल नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया। अधिकारियों के अनुसार दुर्घटना के कारणों की विस्तृत जांच शुरू कर दी गई है। यह पता लगाया जा रहा है कि वाहन चालक का नियंत्रण आखिर किस वजह से बिगड़ा। साथ ही वाहन की तकनीकी स्थिति और सड़क की सुरक्षा व्यवस्था की भी जांच की जा रही है।

इस हादसे ने एक बार फिर सड़क किनारे स्थित खुले कुओं और उनकी सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि जिस कुएं में वाहन गिरा, वहां पर्याप्त सुरक्षा रेलिंग या मजबूत घेराबंदी नहीं थी। यदि कुएं के चारों ओर सुरक्षा अवरोधक लगाए गए होते तो शायद वाहन सीधे उसमें नहीं गिरता और इतनी बड़ी जनहानि टाली जा सकती थी। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि क्षेत्र के सभी खुले कुओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों।

दुर्घटना की खबर फैलते ही रंजनी गांव में मातम पसर गया। जिस गांव से सुबह श्रद्धालु खुशी-खुशी दर्शन के लिए निकले थे, वहां शाम होते-होते हर घर में शोक का माहौल दिखाई देने लगा। गांव की गलियों में सन्नाटा छा गया और लोगों की आंखें नम हो गईं। कई परिवार ऐसे हैं जिन्होंने इस हादसे में अपने घर के एक से अधिक सदस्यों को खो दिया है। मृतकों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई है।

स्थानीय जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों ने भी घटनास्थल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। अधिकारियों ने पीड़ित परिवारों को हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया है। साथ ही दुर्घटना की निष्पक्ष जांच कर दोषी परिस्थितियों की पहचान करने की बात कही है।

यह हादसा केवल एक सड़क दुर्घटना नहीं, बल्कि कई परिवारों के सपनों, उम्मीदों और खुशियों के अचानक समाप्त हो जाने की दर्दनाक कहानी बन गया है। जो लोग सुबह भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद लेकर लौट रहे थे, वे शाम तक काल के गाल में समा गए। पंढरपुर और सोलापुर क्षेत्र में इस हादसे ने हर किसी को स्तब्ध कर दिया है। श्रद्धा और आस्था से शुरू हुआ यह सफर अंततः ऐसी त्रासदी में बदल गया, जिसकी पीड़ा लंबे समय तक लोगों के दिलों में बनी रहेगी।

शांति की दहलीज पर फिर बारूद, बेरूत पर हमले ने मध्य पूर्व को नए संकट में धकेला

नई दिल्ली। मध्य पूर्व में महीनों से चल रही कूटनीतिक हलचलों और शांति प्रयासों के बीच एक बार फिर युद्ध के बादल गहराने लगे हैं। लेबनान की राजधानी बेरूत पर इजरायल के ताजा हवाई हमले ने न केवल क्षेत्रीय तनाव को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है, बल्कि अमेरिका और ईरान के बीच संभावित शांति समझौते की उम्मीदों को भी झटका दिया है। ऐसे समय में जब दुनिया को लग रहा था कि लंबे समय से चले आ रहे टकराव और अविश्वास के दौर में संवाद का नया अध्याय शुरू हो सकता है, तब हुए इस सैन्य हमले ने पूरे क्षेत्र की राजनीतिक और रणनीतिक गणनाओं को बदल दिया है।

रविवार को इजरायली लड़ाकू विमानों ने बेरूत के दक्षिणी उपनगर दहिया क्षेत्र में हवाई हमले किए। यह इलाका लंबे समय से हिज्बुल्लाह का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है। हमले के बाद कई इमारतों को नुकसान पहुंचा, सड़कों पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया और आसमान में धुएं के घने गुबार छा गए। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार इस हमले में कम से कम तीन लोगों की मौत हुई, जबकि 15 से अधिक लोग घायल हो गए। स्थानीय प्रशासन और राहत एजेंसियां प्रभावित इलाकों में राहत एवं बचाव कार्य में जुटी रहीं।

इजरायली सेना ने इस कार्रवाई को आत्मरक्षा का कदम बताते हुए दावा किया कि हिज्बुल्लाह की ओर से उत्तरी इजरायल पर किए गए हमलों के जवाब में यह कार्रवाई की गई है। इजरायल का कहना है कि वह अपनी सीमाओं और नागरिकों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं कर सकता। इजरायल के प्रधानमंत्री Benjamin Netanyahu ने कहा कि देश की सुरक्षा

सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी खतरे का जवाब देना सरकार की जिम्मेदारी है। उनके अनुसार हिज्बुल्लाह लगातार क्षेत्रीय स्थिरता को चुनौती दे रहा है और उसके खिलाफ आवश्यक कदम उठाना अनिवार्य था।

हालांकि इस सैन्य कार्रवाई ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। विशेष रूप से इसलिए क्योंकि पिछले कुछ समय से अमेरिका और ईरान के बीच संवाद की संभावनाएं मजबूत होती दिखाई दे रही थीं। कूटनीतिक सूत्रों के अनुसार दोनों पक्ष कई विवादित मुद्दों पर बातचीत के जरिए समाधान तलाशने की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। ऐसे में बेरूत पर हुआ हमला शांति प्रक्रिया के लिए एक गंभीर चुनौती के रूप में देखा जा रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति Donald Trump ने भी इस घटनाक्रम पर नाराजगी व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि यह हमला ऐसे समय में हुआ है जब क्षेत्र में तनाव कम करने और समझौते की संभावनाओं को मजबूत करने के प्रयास किए जा रहे थे। ट्रंप ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इजरायल को अपनी सुरक्षा का अधिकार है, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में संयम बरतना अधिक आवश्यक था। उन्होंने यह भी कहा कि जिस घटना के जवाब में यह हमला किया गया, उसकी तुलना में प्रतिक्रिया कहीं अधिक व्यापक प्रतीत होती है।

ट्रंप ने इजरायल और हिज्बुल्लाह दोनों से धैर्य और संयम बरतने की अपील करते हुए कहा कि यदि हिंसा का यह सिलसिला नहीं रुका तो क्षेत्र एक बार फिर बड़े संघर्ष की ओर बढ़ सकता है। उनके अनुसार वर्तमान समय मध्य पूर्व के लिए निर्णायक साबित हो सकता है, जहां युद्ध और शांति के बीच बहुत पतली रेखा बची हुई है।

दूसरी ओर ईरान ने भी इस हमले पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। ईरानी सैन्य अधिकारियों ने इसे क्षेत्रीय स्थिरता के खिलाफ कदम बताते हुए चेतावनी दी है कि ऐसी कार्रवाइयों का जवाब दिया जाएगा। ईरान लंबे समय से हिज्बुल्लाह का प्रमुख समर्थक माना जाता रहा है और लेबनान में होने वाले अधिकांश सुरक्षा घटनाक्रमों को तेहरान अपनी रणनीतिक चिंताओं से जोड़कर देखता है।

ईरान के राष्ट्रपति Masoud Pezeshkian ने अपेक्षाकृत संतुलित रुख अपनाते हुए कहा कि वर्तमान संकट का स्थायी समाधान केवल संवाद और कूटनीति के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने संकेत दिया कि देश की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने वार्ता को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर सहमति जताई है। उनके बयान को इस रूप में देखा जा रहा है कि ईरान तनाव बढ़ाने के बजाय बातचीत का रास्ता खुला रखना चाहता है, हालांकि वह अपने सहयोगियों की सुरक्षा को लेकर चिंतित भी है।

मध्य पूर्व की राजनीति में हिज्बुल्लाह की भूमिका लंबे समय से विवाद का विषय रही है। लेबनान में सक्रिय यह संगठन एक ओर राजनीतिक प्रभाव रखता है, तो दूसरी ओर उसके पास मजबूत सैन्य क्षमता भी है। इजरायल और कई पश्चिमी देश उसे सुरक्षा के लिए चुनौती मानते हैं, जबकि ईरान उसे क्षेत्रीय प्रतिरोध का महत्वपूर्ण हिस्सा बताता है। यही कारण है कि हिज्बुल्लाह से जुड़ी किसी भी घटना का प्रभाव केवल लेबनान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इजरायल, ईरान और अमेरिका सहित पूरे क्षेत्र की राजनीति पर पड़ता है।

विश्लेषकों का मानना है कि वर्तमान स्थिति बेहद संवेदनशील है। यदि जवाबी हमलों और सैन्य कार्रवाइयों का सिलसिला जारी रहा तो अमेरिका-ईरान वार्ता प्रभावित हो सकती है। साथ ही लेबनान, सीरिया, इजरायल और व्यापक पश्चिम एशिया में अस्थिरता बढ़ने की आशंका भी प्रबल हो जाएगी। कई अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में क्षेत्र ने अनेक संघर्ष देखे हैं और अब अधिकांश देश आर्थिक पुनर्निर्माण तथा राजनीतिक स्थिरता की दिशा में बढ़ना चाहते हैं। ऐसे में नई सैन्य टकराहट किसी के हित में नहीं होगी।

संयुक्त राष्ट्र और कई अंतरराष्ट्रीय शक्तियां भी हालात पर नजर बनाए हुए हैं। वैश्विक समुदाय की चिंता यह है कि यदि वर्तमान तनाव नियंत्रण से बाहर हुआ तो इसका असर ऊर्जा बाजारों, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैश्विक सुरक्षा पर भी पड़ सकता है। यही वजह है कि दुनिया की निगाहें अब अमेरिका, ईरान, इजरायल और लेबनान की अगली रणनीतिक चालों पर टिकी हुई हैं।

संपादकीय

सस्ताई का स्वर्णकाल और महंगाई का मातम

आजकल जहां देखिए, वहीं महंगाई का रोना सुनाई देता है। चाय की दुकान से लेकर संसद के गलियारों तक, सोशल मीडिया से लेकर मोहल्ले की चौपाल तक हर कोई महंगाई को लेकर चिंतित दिखाई देता है। टमाटर महंगा है, पेट्रोल महंगा है, शिक्षा महंगी है, इलाज महंगा है और तो और अब तो लोगों का समय भी महंगा हो गया है। लेकिन इस महंगाई के शोर में एक बेचारी चीज ऐसी है, जिसकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं जा रहा। वह है सस्ताई। जी हां, वही सस्ताई, जो हर कठिन दौर में भी अपना अस्तित्व बचाए रखने की जिद किए बैठी है। महंगाई और सस्ताई की लड़ाई कोई नई नहीं है। दोनों वर्षों से आमने-सामने हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि महंगाई के पास प्रचार तंत्र बहुत मजबूत है और सस्ताई के पास सिर्फ उदाहरण हैं। महंगाई अखबारों की सुर्खियों में रहती है, जबकि सस्ताई को लोग छोटी-मोटी खबर समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। जबकि अगर ध्यान से देखा जाए तो आज भी हमारे आसपास सस्ताई के इतने नमूने मौजूद हैं कि अर्थशास्त्रियों को उन पर शोध करना चाहिए। जरा राजनीति की दुनिया पर नजर डालिए। अक्सर कहा जाता है कि चुनाव लड़ना अब आम आदमी के बस की बात नहीं रही। चुनावों में करोड़ों और अरबों रुपये खर्च होते हैं। राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदे की रकम सुनकर आम नागरिक का ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। लेकिन इसी माहौल में सस्ताई ने अपना कमाल दिखाया। एक तरफ चुनावी खर्चों के आंकड़े आसमान छू रहे हैं और दूसरी तरफ दस रुपये की झालमुड़ी राजनीतिक चर्चा का विषय बन जाती है। यह सस्ताई की सबसे बड़ी ताकत है कि वह कम खर्च में भी अधिक प्रभाव पैदा करने का दावा करती रहती है। राजनीतिक दलों के गठन की प्रक्रिया को ही देख लीजिए। विशेषज्ञ बताते हैं कि आज के समय में पार्टी बनाना कोई आसान काम नहीं है। संगठन चाहिए, संसाधन चाहिए, कार्यालय चाहिए और सबसे बढ़कर पैसा चाहिए। लेकिन कुछ जगहों पर हालात इतने सरल हो जाते हैं कि लोग सुबह उठते हैं, दोपहर तक विचार करते हैं और शाम तक नई पार्टी की घोषणा कर देते हैं। ऐसा लगता है जैसे राजनीतिक दल नहीं, बल्कि मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च हो रहे हों। सस्ताई का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा कि जहां दूसरे लोग करोड़ों खर्च कर संगठन खड़ा करते हैं, वहीं कुछ लोग सिर्फ नाराजगी के सहारे नई राजनीतिक पहचान बना लेते हैं। विधायकों और सांसदों की चर्चा भी कम दिलचस्प नहीं है। राजनीतिक गलियारों में अक्सर यह धारणा सुनाई देती है कि आज के दौर में जनप्रतिनिधियों का महत्व बहुत बढ़ गया है। उनके समर्थन की कीमत का अनुमान लगाते हुए लोग ऐसे-ऐसे आंकड़े बताते हैं कि सुनने वाला चकरा जाए। लेकिन दूसरी ओर कुछ नेता ऐसे भी दिखाई देते हैं जो बिना किसी विशेष लागत के नई-नई राजनीतिक यात्राओं पर निकल पड़ते हैं। इससे यह भ्रम पैदा हो जाता है कि राजनीति में महंगाई और सस्ताई दोनों एक साथ निवास करती हैं। कूटनीति के क्षेत्र में भी सस्ताई का दबदबा कम नहीं है। पहले माना जाता था कि देशों के रिश्ते मजबूत करने के लिए बड़े-बड़े समझौते, महंगे भोज और लंबी बैठकों की जरूरत होती है। लेकिन आधुनिक दौर में कभी-कभी एक छोटी-सी भेंट, एक साधारण उपहार या एक प्रतीकात्मक वस्तु भी चर्चा का केंद्र बन जाती है। इससे सस्ताई का आत्मविश्वास और बढ़ जाता है। उसे लगता है कि जब बड़े-बड़े काम छोटे-छोटे प्रतीकों से हो सकते हैं, तो फिर उसका भविष्य अभी भी सुरक्षित है।

शिक्षा जगत भी इस बहस से अछूता नहीं है। कभी शिक्षक समाज के सबसे सम्मानित वर्गों में गिने जाते थे। आज भी सम्मान मिलता है, लेकिन उसके साथ विवाद भी जुड़ गए हैं। कोई किसी को कम कीमत का बता देता है, तो कोई किसी की उपयोगिता पर सवाल उठा देता है। मजेदार बात यह है कि शब्दों की इस लड़ाई में इस्तेमाल होने वाली उपमाएं अक्सर सस्ताई से ही जुड़ी होती हैं। कोई किसी को कौड़ी का बताता है, तो कोई फूटी कौड़ी का। हालांकि जब मामला अदालत तक पहुंचता है तो मानहानि के दावे करोड़ों में किए जाते हैं। यानी भाषा में सस्ताई और व्यवहार में महंगाई का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। दरअसल सस्ताई की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह कभी हार नहीं मानती। महंगाई चाहे जितनी बढ़ जाए, सस्ताई कहीं न कहीं अपना रास्ता खोज ही लेती है। कभी वह व्यंग्य में दिखाई देती है, कभी राजनीति में, कभी समाज में और कभी हमारे रोजमर्रा के अनुभवों में।

सोलर मैन के अभियान से जुड़ी समाधान की उम्मीदें

> जलवायु संकट यानी पृथ्वी के निरंतर तेजी से बढ़ते तापमान से राहत तभी संभव है जब हम अपनी जीवनशैली बदलें। प्रो. चेतन सोलंकी आईआईटी की नौकरी व घर-बार छोड़कर इसी को लेकर देशभर में जागरूकता अभियान चलाया है। जगह-जगह लोगों को ज्यादा उपभोग छोड़ सीमित साधनों में जीने की शपथ दिला रहे हैं।

गर्मी तपा रही है, झुलसा रही है। ऐसा क्या धरती में आग लगी है। इस असहनीय तपिश में लोग ये चर्चा करते सुने जाते हैं। प्रो. चेतन सोलंकी कहते हैं कि धरती को बुखार आया है। और धरती का यह बुखार अगर न उतरा, तो हम सब भी नहीं बचेंगे। यह ज्वर उतारने के लिए हर व्यक्ति को एक दवा का काम करना होगा। कौन है प्रो. सोलंकी? वही योगी जिन्होंने जलवायु संकट समाधान पर काम करने के लिए आईआईटी की नौकरी छोड़ दी और 11 साल के लिए घर छोड़ दिया। सफेद धोती व कमीज पहनकर वे मैदान में जुट चुके हैं, पूरे भारत को समाधान की शिक्षा दे रहे हैं।

जब दुनिया जलवायु संकट को लेकर सम्मेलनों, घोषणाओं और वादों में उलझी हुई है, तब भारत में क्लाइमेट सत्याग्रही प्रो. सोलंकी इसे सम्मेलनों से बाहर निकालकर लोगों के बीच ले आया है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई को केवल विचार या शोध का विषय नहीं रहने दिया; बल्कि जीवन-व्रत बना लिया। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित शोधकर्ता का सम्मान पाकर 'सोलर मैन' कहलाए सोलंकी ने कहा कि पृथ्वी को बचाने के लिए उनका रिसर्च का योगदान काफी नहीं बल्कि लोगों के बीच जाना होगा। इस निर्णय के साथ आईआईटी मुम्बई की शानदार नौकरी से इस्तीफा ही नहीं दिया बल्कि 11 साल तक घर छोड़कर करोड़ों लोगों को जलवायु संकट समाधान का हिस्सा बनाने सड़कों पर निकल चुके हैं। प्रो. सोलंकी के इस कदम ने भारत में जलवायु संकट समाधान की कई उम्मीदें जगाई हैं। 2020 से संचालित उनकी ऊर्जा स्वराज यात्रा इस सिद्धांत पर केंद्रित है कि सीमित धरती पर असीमित उपभोग कतई संभव नहीं। इसका समाधान तब निकलेगा जब लोग अतिशय उपभोग की लालसा से बाहर आएं।

चेतन सोलंकी का जन्म साल 1975 में मध्यप्रदेश के गांव नेमित में हुआ। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की। किसी ने सोचा न था कि ये प्रतिभा यूरोप की प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी से पीएचडी करेगी। वे आईआईटी मुंबई में प्रोफेसर बने और सौर ऊर्जा पर महत्वपूर्ण शोध के कारण 'सोलर मैन' कहलाए।

Advertisement

जलवायु संकट की गंभीरता को देखते हुए साल 2020 में उन्होंने आईआईटी से अवकाश लेकर घर छोड़ दिया और 'एनर्जी स्वराज यात्रा' शुरू की। सोलर ऊर्जा से युक्त एक बस उन्होंने तैयार की। उसमें ही वे देश के अलग-अलग हिस्सों में जाते हैं। रहना , नहाना और खाना भी इसी में होता है। हर चीज का कम से कम खर्च। कुछ बरस देश में यात्राएं कर उन्हें लगा कि अब उन्हें आईआईटी की नौकरी भी छोड़ देनी चाहिए और उस फैसले को तुरंत अमली जामा पहनाकर शिद्दत से इस अभियान में जुट गए। उन्होंने बीती 13 मई को दिल्ली के राजघाट से 'क्लाइमेट सत्याग्रह' शुरू किया जो 100 दिन देश के विभिन्न हिस्सों में चलेगा। वे जगह-जगह जाकर लोगों को प्रशिक्षण देते हैं। उनकी क्लास अब आईआईटी से बाहर निकल जनसाधारण के बीच आ गई है।

प्रो. सोलंकी के मुताबिक, जलवायु संकट के कारणों और समाधान दोनों की जिम्मेदारी हर व्यक्ति को लेनी चाहिए। पर्यावरण बचाने के लिए हमें अपनी उपभोग की आदतें बदलनी होंगी, जैसे अनावश्यक खरीदारी व ज्यादा यात्रा की लालसा छोड़नी होगी। यह अभियान पारंपरिक पर्यावरण आंदोलनों से अलग है, क्योंकि इसमें पेड़ लगाना या विरोध प्रदर्शन से ज्यादा ध्यान जीवनशैली में बदलाव पर है। अभियान का केंद्रीय बिंदु है कि अगर लोगों ने अनावश्यक उपभोग पर काबू पा लिया, तभी पृथ्वी के बचने का रास्ता निकलेगा।

'सोलर मैन' हर रोज लोगों को शपथ दिलाते हैं कि अगले एक साल तक नये कपड़े नहीं खरीदेंगे। शपथ लेने वाले बड़ी संख्या में आगे आ रहे हैं, पर सवाल भी करते हैं कि अगर लोगों ने खरीदारी कम की तो अर्थव्यवस्था का क्या होगा? सौलंकी जवाब देते हैं कि जब पृथ्वी के अस्तित्व पर ही संकट आ जाएगा, लोगों के जीवन की क्वालिटी ही न रहेगी, फिर क्या अकेली अर्थव्यवस्था बच जाएगी। वो लोगों को मॉडल समझाते हैं कि संसार उपभोग के शिखर पर जा बैठा, अगर इसे कुछ कम किया तो कोई दिक्कत नहीं आएगी। अति उत्पादन और अति उपभोग का मॉडल ज्यादा दिन चलने वाला नहीं। पृथ्वी ने सहने से हाथ ही खड़े कर दिए, फिर क्या दूसरी पृथ्वी का निर्माण करोगे? साइंस और मनुष्य की आकांक्षाएं बढ़ सकती हैं, पर पृथ्वी नहीं बढ़ेगी। उन्होंने एक व्यंग्यात्मक वीडियो जारी किया है—'बेचारे पेड़'। जिसका संदेश है कि हम मनुष्य पर्यावरण पर पूरा अनाचार करेंगे और उसके बाद उम्मीद रखेंगे कि हमें पेड़ बचाएंगे। ऐसा संभव नहीं।

अपने सभी तर्कों को प्रो. सोलंकी ने अपनी किताब 'क्लाइमेट चेंज 2100 : सरवाइव ऑर थ्राइव' में एक लड़ी में पिरोकर लोगों के सामने रख दिया है। उनकी पुस्तक में जिक्र है- लोग उनसे अकसर पूछते हैं कि जलवायु आपदा पर काम करने की प्रेरणा उन्हें कहां से मिली—इस पर उनका जवाब होता है कि जब शेर सामने नजर आ जाए तो भागने के लिए किसी से प्रेरणा लेनी होती है क्या? मनुष्य स्वाभाविक ही भाग लेता है।

उल्लेखनीय है, प्रोफेशनल वॉलन्टियर्स की एक टीम उनके लिए काम कर रही है जो विभिन्न राज्यों में लोगों को सीमित उपभोग की शपथ दिला रही है। दरअसल, सोलर मैन के प्रयासों से देश में क्लाइमेट सत्याग्रह नई चेतना पैदा करेगा। जबकि इसके ठोस परिणाम लोगों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर होंगे। यदि व्यापक जनभागीदारी हो गई, तो शायद भारत ही नहीं अन्य देशों में मनुष्य जाति समझ पाए कि हम अतिशय उपभोग के बोझ तले दबे हैं।

प्रेरणा

विकास की कीमत

सुबह का समय था। सूरज अभी-अभी धरती के आंचल पर अपनी सुनहरी किरणें बिखेरना शुरू कर रहा था। रात की नमी अब भी पत्तियों पर मोतियों की तरह चमक रही थी। हल्की हवा खेतों को छूकर गुजर रही थी और दूर कहीं कोयल की मधुर आवाज वातावरण में एक अलग ही मिठास घोल रही थी। अविनाश अपने नौ वर्षीय बेटे आरव का हाथ थामे फार्म हाउस के रास्ते पर धीरे-धीरे टहल रहा था। प्रकृति का यह दृश्य देखने में जितना सुंदर था, उतना ही उसके भीतर एक गहरा दर्द भी छिपा था।

कभी यह पूरा इलाका घने जंगलों से भरा हुआ था। दूर-दूर तक फैले विशाल वृक्ष, बेलों से लिपटी शाखाएं, रंग-बिरंगे पक्षियों की चहचहाहट और जंगली फूलों की खुशबू यहां की पहचान हुआ करती थी। सुबह होते ही ऐसा लगता था जैसे प्रकृति स्वयं कोई संगीत सभा आयोजित कर रही हो। हवा भी पेड़ों की शाखाओं से टकराकर एक अलग ही धुन पैदा करती थी। लेकिन समय के साथ सब कुछ बदल गया।

शहर का विस्तार बढ़ा तो लोगों की नजरें जंगलों की जमीन पर टिक गईं। जहां कभी पक्षियों के घोंसले थे, वहां अब नक्शे बनने लगे। जहां हिरण दौड़ा करते थे, वहां बुलडोजर चलने लगे। धीरे-धीरे जंगल सिकुड़ते गए और कंक्रीट के ढांचे उगते गए।

अविनाश को अपना यहां बसना याद था। वर्षों पहले उसने शहर के शोर-शराबे से दूर सुकून की तलाश में यह जमीन खरीदी थी। वह चाहता था कि उसका परिवार प्रकृति के बीच जीवन बिताए। उसकी पत्नी नंदिता को भी यह स्थान बहुत प्रिय था। सावन के दिनों में दोनों पेड़ों के नीचे बैठकर घंटों बातें करते थे। बारिश की बूंदें जब पत्तों पर गिरती थीं तो ऐसा लगता था जैसे धरती कोई मधुर राग गा रही हो।

लेकिन आज वह सब केवल स्मृतियां बनकर रह गया था।

इन्हीं विचारों में खोए अविनाश को अचानक आरव की आवाज सुनाई दी।

"पापा, लोग अपने सपनों के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?"

अविनाश ने मुस्कुराकर बेटे की ओर देखा।

"क्यों बेटा, यह सवाल कैसे आया?"

"स्कूल में सर कह रहे थे कि हर बड़ी सफलता के पीछे बड़ा संघर्ष होता है। तो क्या हर सपना अच्छा होता है?"

प्रश्न सुनकर अविनाश कुछ क्षण सोचने लगा।

"सपने अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी। यह इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें पूरा करने के लिए हम क्या खोते हैं और क्या बचाते हैं।"

आरव ने सिर हिलाया, लेकिन शायद वह पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ।

उसी समय एक तीखी आवाज ने वातावरण का सन्नाटा तोड़ दिया। दोनों ने मुड़कर देखा। कुछ दूरी पर एक विशाल मशीन पेड़ों को काट रही थी। लोहे के दांतों वाली मशीन एक-एक करके वृक्षों को गिरा रही थी। हर बार जब कोई पेड़ धरती पर गिरता, तो ऐसा लगता मानो कोई बूढ़ा योद्धा अंतिम सांस लेकर धराशायी हो गया हो।

वहां पास में खड़े थे मल्होत्रा साहब।

कई वर्षों से वह इस जमीन पर एक आलीशान टाउनशिप बनाना चाहते थे। आखिरकार सभी कानूनी प्रक्रियाएं पूरी हो चुकी थीं और उनका सपना साकार होने जा रहा था। उनके चेहरे पर संतोष और विजय का भाव था।

अविनाश ने धीमे स्वर में कहा, "देखो बेटा, किसी का सपना पूरा हो रहा है।"

इतने में एक और विशाल पेड़ कटकर गिरा। उसके साथ ही दर्जनों घोंसले नीचे आ गिरे। कुछ अंडे टूट गए। घायल पक्षी घबराकर इधर-उधर उड़ने लगे। उनकी चीखें पूरे वातावरण में गूंज उठीं।

आरव स्तब्ध रह गया।

"पापा, क्या सपना पूरा होने पर हमेशा कोई न कोई हारता है?"

यह सवाल सुनकर अविनाश के कदम रुक गए।

उसने देखा कि गिरा हुआ पेड़ अभी भी धूल में पड़ा था और उसके ऊपर कुछ घायल चिड़ियां फड़फड़ा रही थीं।

दोनों धीरे-धीरे मल्होत्रा साहब की ओर बढ़े।

आरव ने मासूमियत से कहा, "अंकल, अब यहां पक्षी नहीं आएंगे। आपको सफाई भी कम करनी पड़ेगी।"

बच्चे की बात सुनकर मल्होत्रा साहब के चेहरे की मुस्कान गायब हो गई।

उनकी आंखों के सामने अचानक अपना बचपन घूम गया। गांव की गलियां, पेड़ों पर चढ़ना, आम तोड़ना, बरगद की छांव में खेलना और शाम को लौटते पक्षियों का झुंड।

उन्हें याद आया कि उन्हीं पेड़ों ने उनके बचपन को खुशियों से भर दिया था।

आज वही पेड़ उनकी महत्वाकांक्षा के रास्ते की बाधा बन गए थे।

कुछ क्षणों के लिए उनके भीतर अजीब-सा संघर्ष शुरू हो गया।

एक ओर वर्षों का सपना था।

दूसरी ओर प्रकृति की मौन पुकार।

तभी मजदूर ने आवाज लगाई, "साहब, अगली लाइन के पेड़ भी काटने हैं।"

मल्होत्रा साहब ने कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द गले में अटक गए।

मशीन फिर चल पड़ी।

पेड़ गिरते गए।

घोंसले टूटते गए।

पक्षी उड़ते गए।

और सपनों का शहर धीरे-धीरे आकार लेने लगा।

शाम तक पूरा दृश्य बदल चुका था। जहां सुबह तक हरियाली का साम्राज्य था, वहां अब केवल कटे हुए तनों का ढेर दिखाई दे रहा था। वातावरण में मिट्टी, धूल और उदासी घुल चुकी थी।

डूबते सूरज की लालिमा उन लकड़ियों पर पड़ रही थी, मानो प्रकृति स्वयं शोक मना रही हो।

आरव काफी देर तक सब कुछ देखता रहा।

फिर उसने पूछा, "पापा, अगर पेड़ बोल सकते तो क्या कहते?"

अविनाश की आंखें नम हो गईं।

उसने धीरे से कहा, "शायद वे कहते कि हमने तुम्हें छांव दी, फल दिए, हवा दी, जीवन दिया। बदले में तुमने हमें काट दिया।"

आरव कुछ देर चुप रहा।

फिर बोला, "तो क्या बड़े लोग हमेशा गलती करते हैं?"

"नहीं बेटा," अविनाश ने कहा, "बड़े लोग गलती तब करते हैं जब वे केवल अपना फायदा देखते हैं और बाकी दुनिया को भूल जाते हैं।"

रात होने लगी थी।

वैश्विक चिंताओं से निपटने की चुनौती

हाल में विश्व बैंक ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि चालू वित्त वर्ष 2026-27 में वैश्विक विकास दर घटकर 2.5 प्रतिशत रह जाएगी, वहीं भारत 6.6 प्रतिशत विकास दर के साथ दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई बड़ी अर्थव्यवस्था बना रहेगा। वस्तुतः वैश्विक आर्थिक झटकों के बीच भारत की अर्थव्यवस्था डिजिटल विकास, जीएसटी-आयकर सुधार, परमाणु ऊर्जा, व्यापार समझौते, सेवा क्षेत्र, बुनियादी ढांचा और मैन्यूफैक्चरिंग विकास से बेहतर स्थिति में है।

सरकार तेजी से रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफार्म के मंत्रों के साथ संरचनात्मक सुधारों को गति देते हुए अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ा रही है। इसकी बदौलत वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की अर्थव्यवस्था ने 7.7 प्रतिशत की दर से वृद्धि की है। यह वित्त वर्ष 2024-25 की 7.1 प्रतिशत की विकास दर के मुकाबले बेहतर है। स्पष्ट है कि देश की आर्थिक गतिविधियों में तेजी बनी हुई है, जिससे अर्थव्यवस्था को रफ्तार मिल रही है। कच्चे तेल की बढ़ती कीमत और सब्सिडी के भारी बोझ के बावजूद आर्थिक रफ्तार नहीं थमी है, लेकिन चालू वित्त वर्ष 2026-27 में पूरी दुनिया के साथ-साथ भारत के सामने भी आर्थिक चुनौतियां और बढ़ेंगी। अतः भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए नए उपाय सुनिश्चित करने होंगे। इसके लिए सरकार को ईज आफ लिविंग (जीवन को आसान बनाने) और ईज आफ डूइंग बिजनेस (कारोबारी सुगमता) में सुधार के लिए प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ना होगा। अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मौजूदा आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया है। इस दौरान लोगों के जीवन स्तर में सुधार, आपूर्ति श्रृंखलाओं में आने वाले व्यवधानों से निपटना, आर्थिक सुधारों को गति देना तथा उद्योग और व्यापार की सुगमता बढ़ाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

इन प्रयासों का उद्देश्य देश के सामने मौजूद चुनौतियों के बीच उपलब्ध संभावनाओं का बेहतर उपयोग करते हुए विकास दर को बनाए रखना और अर्थव्यवस्था को अधिक मजबूत बनाना है। साथ ही रणनीतिक दृष्टि से आगे बढ़ते हुए दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने पर भी बल दिया गया। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि भारत आगामी 10 महीनों में नौ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) लागू करेगा। अमेरिका के साथ भारत का व्यापार समझौता भी अगले माह के मध्य तक संभावित है। इससे देश निर्यात, विनिर्माण और निवेश का वैश्विक केंद्र बनने की राह पर आगे बढ़ते हुए दिखाई देगा। यह कोई छोटी बात नहीं है कि जब इस समय वैश्विक निर्यात का ग्राफ तेजी से घट रहा है, वहीं अप्रैल-मई माह 2026 में भारत का निर्यात पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले करीब 15 प्रतिशत बढ़ गया है।

बीते वर्ष मारीशस, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), आस्ट्रेलिया और चार यूरोपीय देशों-आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नार्वे और लिंकेस्टाइन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के साथ हुए एफटीए का लाभ मिलते दिख रहा है। हाल में भारत और ओमान के बीच भी वृहद आर्थिक एवं साझेदारी समझौता (सीईपीए) लागू हो गया है। इससे आगामी पांच वर्षों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार दोगुना होकर 20 अरब डालर के पार पहुंचने का अनुमान है। इसके जरिये ओमान में भारत के कृषि, समुद्री उत्पाद, रत्न एवं आभूषण, फार्मास्यूटिकल्स, वस्त्र, प्लास्टिक, इंजीनियरिंग सामान, कपड़ा, फुटवियर और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों को निर्यात विस्तार का अवसर मिलेगा। यह समझौता दक्षिण एशिया, खाड़ी क्षेत्र और पूर्वी अफ्रीका को जोड़ने वाला एक रणनीतिक आर्थिक गलियारा स्थापित करेगा। इससे कारोबार बढ़ने के साथ रोजगार मौके भी बढ़ेंगे। इसमें कोई दो मत नहीं कि भारत एफटीए की डगर पर तेजी से बढ़ रहा है।

विगत दिनों भारत और न्यूजीलैंड के बीच भी एक ऐतिहासिक एफटीए पर हस्ताक्षर हुआ और यह जल्द ही लागू होगा। भारत-यूरोपीय संघ के बीच हुए एफटीए तथा ब्रिटेन के साथ हुए एफटीए का भी क्रियान्वयन इसी वर्ष संभावित है। इनके साथ भारत कनाडा, इजरायल, रूस, पेरू, चिली, दक्षिण अफ्रीका और मेक्सिको के साथ मुक्त व्यापार समझौते करने पर बात कर रहा है। अब सरकार को अर्थव्यवस्था के समक्ष आने वाली चुनौतियों, जैसे कमजोर मानसून, सूखे की आशंका, महंगाई, मांग में कमी तथा वित्तीय दबावों से निपटने पर विशेष ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए इस वर्ष के बजट में विनिवेश से प्राप्त किए जाने वाले 80 हजार करोड़ रुपये के लक्ष्य को हासिल करने, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के प्रवाह को बढ़ाने तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहित करने जैसे उपायों पर तेजी से कार्य किया जाना चाहिए।

इसके साथ ही व्यापार से जुड़ी विभिन्न व्यवस्थाओं को भ्रष्टाचार-मुक्त बनाते हुए व्यापारिक समझौतों के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में भी ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। सेवा क्षेत्र, विनिर्माण और बुनियादी ढांचे की मजबूत नींव के आधार पर चालू वित्तीय वर्ष में लगभग सात प्रतिशत की विकास दर प्राप्त करने तथा अर्थव्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए रणनीतिक रूप से आगे बढ़ना चाहिए।

अभियान

देवताओं के दूत और ज्ञान के अमर प्रवाह: नारद मुनि का अद्भुत व्यक्तित्व

भारतीय सनातन परंपरा में अनेक ऋषि-मुनियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने केवल तप और साधना के माध्यम से ही नहीं, बल्कि ज्ञान, भक्ति और लोककल्याण के कार्यों के द्वारा भी अमर स्थान प्राप्त किया है। इन महान विभूतियों में देवर्षि नारद का नाम अत्यंत आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वे केवल एक ऋषि नहीं, बल्कि तीनों लोकों को जोड़ने वाले दिव्य संदेशवाहक, भगवान विष्णु के परम भक्त, संगीत के महान आचार्य और धर्म के प्रचारक माने जाते हैं। भारतीय पुराणों, महाभारत, रामायण तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में उनका उल्लेख बार-बार मिलता है। हाथों में वीणा, मुख पर "नारायण-नारायण" का सतत जाप और हृदय में भगवान विष्णु के प्रति अनन्य प्रेम—यही उनकी पहचान है।

नारद मुनि का व्यक्तित्व जितना सरल दिखाई देता है, उतना ही रहस्यमय और गहन भी है। वे ऐसे ऋषि हैं जो देवताओं, मनुष्यों और असुरों के बीच समान रूप से सम्मानित रहे। उनकी उपस्थिति केवल संदेश पहुंचाने तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे समय-समय पर ऐसी घटनाओं के सूत्रधार भी बने, जिन्होंने धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश का मार्ग प्रशस्त किया। यही कारण है कि उन्हें ब्रह्मांड का पहला संवाददाता, पहला संचारक और कई विद्वानों द्वारा पहला पत्रकार भी कहा जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार नारद मुनि ब्रह्मा जी के मानस पुत्र हैं। मानस पुत्र का अर्थ है वह संतान जो ब्रह्मा के मन से उत्पन्न हुई हो। ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना के दौरान अनेक मानस पुत्रों को उत्पन्न किया था, जिनमें नारद का स्थान विशेष माना जाता है। जन्म से ही उनका मन सांसारिक विषयों में नहीं लगा। वे ईश्वर भक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान की ओर आकर्षित हुए। कहा जाता है कि बचपन से ही उनमें अद्भुत वैराग्य था और यही कारण था कि उन्होंने सांसारिक जीवन को त्यागकर भक्ति के मार्ग को अपनाया।

नारद मुनि को देवर्षि की उपाधि प्राप्त है। ऋषियों की अनेक श्रेणियां बताई गई हैं, जैसे ब्रह्मर्षि, महर्षि और राजर्षि, लेकिन देवर्षि का पद अत्यंत दुर्लभ माना जाता है। यह उपाधि ऐसे ऋषि को दी जाती है जो केवल ज्ञान और तप में ही श्रेष्ठ न हो, बल्कि देवताओं के बीच भी सम्मानित हो। नारद मुनि ने अपने तप, विद्वता और भक्ति के बल पर यह स्थान प्राप्त किया। वे देवताओं के सलाहकार भी माने जाते हैं और अनेक अवसरों पर उन्होंने देवताओं को संकट से उबारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगवान विष्णु के प्रति उनकी भक्ति अद्वितीय मानी जाती है। वे हर समय "नारायण-नारायण" का जाप करते रहते हैं। उनके लिए संसार का प्रत्येक कार्य भगवान की इच्छा का विस्तार था। वे जहां भी जाते, लोगों को भक्ति, धर्म और सदाचार का संदेश देते। उनकी कथाएं बताती हैं कि उन्होंने केवल देवताओं को ही नहीं, बल्कि असुरों, राजाओं और सामान्य मनुष्यों को भी भगवान की भक्ति का मार्ग दिखाया। भक्त प्रह्लाद की कथा में भी नारद मुनि की महत्वपूर्ण भूमिका बताई जाती है। कहा जाता है कि जब प्रह्लाद की माता गर्भवती थीं, तब नारद मुनि ने उन्हें भगवान विष्णु की महिमा सुनाई थी। उसी का प्रभाव था कि प्रह्लाद जन्म से ही विष्णु भक्त बने। नारद मुनि की सबसे बड़ी विशेषता उनका तीनों लोकों में निर्बाध विचरण करना है। स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—तीनों लोकों में उनका समान अधिकार माना जाता है। वे कहीं भी आ-जा सकते हैं और किसी भी घटना की जानकारी तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। यही कारण है कि उन्हें देवताओं और मनुष्यों के बीच संवाद का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम माना गया। वे एक स्थान से दूसरे स्थान तक सूचनाएं पहुंचाते थे और कई बार उनके द्वारा दी गई जानकारी ने बड़े-बड़े घटनाक्रमों को जन्म दिया। आधुनिक दृष्टि से देखा जाए तो सूचना संचार और संवाद की जो भूमिका आज पत्रकार निभाते हैं, वैसी ही भूमिका पौराणिक युग में नारद मुनि निभाते दिखाई देते हैं।

हालांकि अनेक कथाओं में उन्हें कलह कराने वाला भी बताया गया है, लेकिन यह केवल सतही दृष्टिकोण है। वास्तव में उनका उद्देश्य कभी विवाद उत्पन्न करना नहीं था। वे ऐसी परिस्थितियां निर्मित करते थे जिनसे सत्य सामने आए और धर्म की स्थापना हो सके। कई बार उनकी कही हुई बातों से घटनाओं की श्रृंखला प्रारंभ होती थी, लेकिन अंततः उसका परिणाम धर्म और न्याय की विजय के रूप में सामने आता था। इसलिए उन्हें केवल संदेशवाहक नहीं, बल्कि धर्म के रणनीतिक संरक्षक के रूप में भी देखा जाता है।

नारद मुनि को संगीत का महान आचार्य भी माना जाता है। उनके हाथ में सदैव वीणा रहती है, जिसे "महती वीणा" कहा जाता है। भारतीय संगीत परंपरा में उनका स्थान अत्यंत ऊंचा है। माना जाता है कि उन्होंने संगीत को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि ईश्वर तक पहुंचने का साधन बनाया। भक्ति संगीत और कीर्तन परंपरा के विकास में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। संगीत के माध्यम से भगवान का स्मरण और आत्मा की शुद्धि का जो विचार भारतीय संस्कृति में मिलता है, उसमें नारद मुनि की छाप स्पष्ट दिखाई देती है।

धार्मिक ग्रंथों में यह भी उल्लेख मिलता है कि नारद मुनि 64 कलाओं और विद्याओं के ज्ञाता थे। प्राचीन भारत में 64 विद्याओं को संपूर्ण ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। इनमें संगीत, नृत्य, काव्य, राजनीति, दर्शन, ज्योतिष, युद्धकला और अनेक प्रकार के ज्ञान शामिल थे। नारद मुनि इन सभी विद्याओं में पारंगत बताए गए हैं। उनकी बुद्धिमत्ता और संवाद कौशल इतना प्रभावशाली था कि वे जटिल से जटिल विषय को भी सरल शब्दों में समझा देते थे। यही कारण है कि उन्हें केवल ऋषि ही नहीं, बल्कि महान शिक्षक और दार्शनिक भी माना जाता है।

नारद मुनि का नाम उन चिरंजीवियों में भी लिया जाता है जो काल की सीमाओं से परे माने जाते हैं। चिरंजीवी का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जो युगों तक जीवित रहे और संसार के कल्याण के लिए कार्य करता रहे। मान्यता है कि नारद मुनि आज भी ब्रह्मांड में विचरण कर रहे हैं और ईश्वर की इच्छा के अनुसार धर्म की रक्षा तथा भक्ति के प्रचार का कार्य कर रहे हैं। यह विश्वास उन्हें अन्य ऋषियों से अलग और विशिष्ट बनाता है।

महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। महाभारत में उन्होंने युधिष्ठिर को राजधर्म और नीति का उपदेश दिया। रामायण में भी अनेक घटनाओं के पीछे उनकी प्रेरणा मानी जाती है। वे केवल दर्शक नहीं थे, बल्कि समय-समय पर मार्गदर्शक बनकर सामने आते थे। उनके विचारों में धर्म, नीति, भक्ति और लोककल्याण का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

आज के समय में जब संचार और सूचना का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है, तब नारद मुनि का व्यक्तित्व और भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। वे हमें यह सिखाते हैं कि संवाद केवल सूचना पहुंचाने का माध्यम नहीं होना चाहिए, बल्कि उसका उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना भी होना चाहिए। ज्ञान तभी सार्थक है जब वह लोककल्याण के लिए प्रयुक्त हो और भक्ति तभी पूर्ण है जब वह मानवता के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करे। देवर्षि नारद का जीवन केवल पौराणिक कथाओं का हिस्सा नहीं है, बल्कि वह भारतीय संस्कृति की उस परंपरा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान, भक्ति, संगीत और संवाद को समान महत्व दिया गया है। उनकी कथाएं हमें यह याद दिलाती हैं कि सत्य, धर्म और भक्ति की शक्ति किसी भी युग में प्रासंगिक रहती है। वे केवल भगवान विष्णु के प्रिय भक्त नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति के उन अमर प्रतीकों में से एक हैं जिनकी प्रेरणा युगों तक मानव समाज का मार्गदर्शन करती रहेगी। यही कारण है कि हजारों वर्षों बाद भी जब कोई "नारायण-नारायण" का उच्चारण सुनता है, तो उसके मन में देवर्षि नारद की छवि स्वतः उभर आती है—एक ऐसे दिव्य ऋषि की, जिसने ज्ञान और भक्ति के प्रकाश से तीनों लोकों को आलोकित किया।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

12 वर्ष : जन विश्वास के, विकास के, जन कल्याण के

गुजरात साइंस सिटी : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से बना वैश्विक ज्ञान और आधुनिक प्रगति का जीवंत प्रतीक

▸▸ मई-2026 तक लगभग 1.43 करोड़ से अधिक विज्ञान प्रेमियों और विद्यार्थियों ने साइंस सिटी का दौरा किया

▸▸ नेचर पार्क, रोबोटिक्स, एक्वेटिक, एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस साइंस गैलरी, प्लैनेट अर्थ, एनर्जी एजुकेशन पार्क तथा म्यूजिकल फाउंटेन के माध्यम से 'गुजरात साइंस सिटी' देश का अग्रणी विज्ञान केंद्र बना है

▸▸ वर्तमान में एविएशन एंड डिफेंस गैलरी तथा ह्यूमन एंड बायोलॉजिकल साइंस गैलरी का निर्माण कार्य जारी है, जो विज्ञान जगत में गुजरात के लिए एक बड़ी उपलब्धि के समान होगा

▸▸ साइंस सिटी केवल एक पर्यटन स्थल नहीं है,बल्कि नई पीढ़ी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुसंधान और नवाचार (इनोवेशन) को प्रोत्साहित करने वाला एक श्रेष्ठ माध्यम है

गांधीनगर, 14 जून : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व के 12 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के अवसर पर गुजरात में हुए अभूतपूर्व विकास कार्यों में अहमदाबाद स्थित 'गुजरात साइंस सिटी' एक गौरवशाली और प्रेरणादायक उपलब्धि के रूप में उभरा है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने के प्रधानमंत्री के विजन के परिणामस्वरूप आज गुजरात साइंस सिटी देश के अग्रणी विज्ञान केंद्रों में सर्वोच्च स्थान रखता है। विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ यह केंद्र आज ज्ञान, नवाचार और प्रगति का वैश्विक प्रतीक बन गया है।

वर्ष 2006 से मई 2026 तक लगभग 1.43 करोड़ से अधिक विज्ञान प्रेमियों तथा विद्यार्थियों ने साइंस सिटी का दौरा कर विज्ञान को नजदीक से समझने, अनुभव करने और सीखने का प्रयास किया है।

अहमदाबाद स्थित 'गुजरात साइंस सिटी' की स्थापना 10 अगस्त 1999 को की गई थी। श्री नरेन्द्र मोदी के गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यकाल के दौरान शुरू किए गए आधुनिकीकरण और विस्तार के भगीरथ प्रयासों से इस संस्था की विकास यात्रा को और अधिक गति मिली। विज्ञान को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखते हुए उसे अनुभव-आधारित और रोचक बनाने के दृष्टिकोण के साथ साइंस सिटी को सतत नई दिशा दी गई है। आज यह संस्था केवल विज्ञान के प्रदर्शन का केंद्र नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और परिवारों के लिए प्रेरणा का एक सशक्त माध्यम बन गई है।

प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार 9 जनवरी 2017 को 'नोबेल प्राइज सीरीज' कार्यक्रम के दौरान तथा दूसरी बार 27 सितंबर 2023 को 'वाइब्रेंट गुजरात' की सक्सेस समिट के दौरान 'गुजरात साइंस सिटी' का दौरा किया था। इस यात्रा के दौरान उन्होंने केंद्र के वैश्विक स्तर के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और मार्गदर्शक सुझाव दिए थे, जिन्हें आज गुजरात सरकार साकार कर रहीं हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अर्जुन मोढवाडिया के सतत प्रयासों से आगामी समय में साइंस सिटी में एविएशन एंड डिफेंस गैलरी, ह्यूमन एंड बायोलॉजिकल साइंस गैलरी तथा अनलीशिंग द डिजिटल फ्यूचर गैलरी जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक आकर्षणों का समावेश होने जा रहा है।

विद्यार्थियों और विज्ञान प्रेमियों के लिए प्रमुख आकर्षण

एक्वेटिक गैलरी :

▸▸ एक्वेटिक गैलरी भारत के सबसे बड़े मछली घरों में से एक है, जिसमें 68 टैंक और 188 प्रजातियां देखने को मिलती हैं।

▸▸ इस एक्वेरियम में 11,600 से अधिक मछलियां तथा शार्क भी मौजूद हैं। यहां 28 मीटर लंबी 'शार्क टनल' भी स्थित है।

▸▸ इस गैलरी में इंडियन जोन, एशियन जोन और अफ्रीकन जोन सहित 10 विभिन्न समुद्री क्षेत्रों का निर्माण किया गया है। इसके अलावा यहां अफ्रीकन पेंगुइन का आकर्षक प्रदर्शन तथा आधुनिक 5डी थिएटर की सुविधा भी उपलब्ध है।

एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस साइंस गैलरी

▸▸ इस गैलरी का निर्माण 12,797 वर्ग मीटर क्षेत्र में सौरमंडल की थीम पर किया गया है।

▸▸ इस गैलरी में 172 सीटों वाला हाइब्रिड प्लैनेटोरियम, स्पेस ऑब्जर्वेशन के लिए टेलीस्कोप युक्त विशेष केंद्र तथा 150 से अधिक अद्भुत प्रदर्शनी सामग्री मौजूद हैं।

रोबोटिक्स गैलरी

▸▸ 11,000 वर्ग मीटर में फैली इस गैलरी में 79 प्रकार के कुल 202 रोबोट देखने को मिलते हैं।

▸▸ इस गैलरी में मानव जैसे दिखने वाले 'ह्यूमनॉइड रोबोट', एक अत्याधुनिक वीआर/एआर गैलरी तथा एक रोबो कैफे मौजूद है, जहां रोबोट शेफ द्वारा भोजन तैयार किया जाता है और रोबोट वेटर द्वारा परोसा जाता है।

आईमैक्स 3डी थिएटर

▸▸ इस थिएटर में रोमांचक 3डी अनुभव का आनंद लिया जा सकता है।

▸▸ थिएटर में हबल 3डी, स्पेस स्टेशन, मैग्निफिसेंट डेसोलेशनः वॉकिंग ऑन द मून तथा टी-रेक्स : बैक टू द क्रेटेशियस जैसी फिल्मों का प्रदर्शन किया जाता है।

मल्टीमीडिया लेजर और फाउंटेन शो

▸▸ इस म्यूजिकल फाउंटेन में 36×16 मीटर की वॉटर स्क्रीन तथा 16×9 मीटर की दो स्क्रीन का उपयोग कर 70 मीटर लंबे आकर्षक 3डी प्रोजेक्शन के माध्यम से दर्शकों को एक अद्भुत और रोमांचक अनुभव प्रदान किया जाता है।

प्लैनेट अर्थ

▸▸ यह गैलरी आगंतुकों को भूकंप और ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाओं, मानव शरीर की संरचना, जैव विविधता तथा पृथ्वी पर जीवन के विकास के बारे में रोचक जानकारी प्रदान करती है।

▸▸ इसके साथ ही यहां भूमिगत कोयला खदान का मॉडल तथा एक 4डी थिएटर भी देखने को मिलता है।

नेचर पार्क

▸▸ 20 एकड़ में फैले इस पार्क में वॉकिंग और जॉगिंग ट्रैक, मिस्ट फॉरेस्ट (धुंध से आच्छादित जंगल), बटरफ्लाई गार्डन, ओपन जिम, चेस गार्डन तथा योगा गार्डन जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

▸▸ यहां विलुप्त हो चुके प्राणियों की 15 प्रतिमाएं भी स्थापित की गई हैं, जिनमें मैमथ, टेरर बर्ड और सेबर-टूथ लायन जैसे जीव शामिल हैं।

एनर्जी एजुकेशन पार्क

▸▸ यह पार्क ऊर्जा संरक्षण और घटते प्राकृतिक संसाधनों के प्रति आगंतुकों में जागरूकता पैदा करता है।

▸▸ यहां की प्रदर्शनी प्राचीन भारतीय दर्शन के पांच मूलभूत तत्वों; तेज, मरुत, अप, क्षिति और व्योम पर आधारित है।

लाइफ साइंस पार्क

▸▸ इस पार्क में एक नदी तंत्र, बटरफ्लाई पार्क, पक्षीघर (एवियरी), उड़ान न भर सकने वाले पक्षियों का केंद्र तथा एक टिश्यू कल्चर प्रयोगशाला स्थापित है।

हॉल ऑफ साइंस और हॉल ऑफ स्पेस

▸▸ हॉल ऑफ साइंस एक विशाल ओपन लैबोरेटरी है, जहां आगंतुक स्वयं प्रयोग करके प्रकाश, दृष्टि, गति विज्ञान और ध्वनि के सिद्धांतों को रोचक तरीके से समझ सकते हैं।

▸▸ हॉल ऑफ स्पेस : इस विभाग में आगंतुकों के लिए मंगल ग्रह की रोमांचक यात्रा का अनुभव कराने वाली 'मिशन टू मार्स' विशेष सिम्युलेटेड राइड उपलब्ध है।

साइंस सिटी की विकास यात्रा के नए मील के पत्थर

▸▸ साइंस सिटी की वैश्विक लोकप्रियता और वैज्ञानिक समृद्धि को और बढ़ाने के उद्देश्य से प्रथम चरण में दो नई भव्य गैलरियों का निर्माण कार्य जारी है, जो विज्ञान जगत में गुजरात के लिए एक बड़ी उपलब्धि के समान होंगी।

एविएशन एंड डिफेंस गैलरी

▸▸ इस गैलरी के माध्यम से आगंतुकों को देश की आधुनिक रक्षा तकनीकों, सैन्य हथियारों, विमान विज्ञान (एविएशन) तथा आकाश में मानव की प्रगति का रोमांचक अनुभव प्राप्त होगा।

ह्यूमन एंड बायोलॉजिकल साइंस गैलरी

▸▸ यह गैलरी मानव शरीर की जटिल आंतरिक संरचना, जैविक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं तथा भविष्य की चिकित्सा और वैज्ञानिक संभावनाओं के बारे में अत्यंत इंटरैक्टिव डिजिटल माध्यमों से ज्ञान प्रदान करेगी।

आगंतुकों के लिए अन्य आकर्षण

▸▸ विज्ञान भवन एक सम्पूर्ण एयर-कंडीशन्ड पीईबी भवन है, जिसमें एलईडी स्क्रीन, विशाल मंच तथा लगभग 5,000 दर्शकों के बैठने की क्षमता उपलब्ध है। साइंस ड्रामा और मैजिक शो के आयोजन के लिए 1,200 दर्शकों की क्षमता वाला एक ओपन-एयर थिएटर भी यहां स्थित है। नोबेल डोम 500 सीटों की क्षमता वाला एक एयर कंडीशन्ड भवन है, जिसे विशेष रूप से ट्रैवलिंग एग्जीबिशन और वैज्ञानिक वर्कशॉप के लिए तैयार किया गया है।

विशेष रूप से बच्चों के लिए विकसित चिल्ड्रन एक्टिविटी सेंटर प्रायोगिक गतिविधियों, भौतिक विज्ञान के प्रयोगों तथा रासायनिक प्रक्रियाओं को सीखने के लिए एक अनूठा केंद्र है। यहां 30 सीटों वाली एक सिम्युलेटर थ्रिल राइड भी उपलब्ध है, जो आगंतुकों को रोलर कोस्टर की सवारी, डायनो सफारी तथा एरोबैटिक विमान उड़ाने का रोमांचक अनुभव प्रदान करती है।

महानुभावों एवं आगंतुकों की प्रतिक्रियाएं

श्री आशीष सोनी, वैज्ञानिक/इंजीनियर, एसएसी : इसरो

मेरे लिए विज्ञान और अंतरिक्ष हमेशा से जिज्ञासा का विषय रहे हैं। यहां जिस प्रकार 'एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस साइंस गैलरी' का विकास किया गया है, वह प्रत्येक व्यक्ति और विशेष रूप से विद्यार्थियों की ज्ञान-पिपासा को संतुष्ट करता है। प्राचीन अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर आज के आधुनिक विश्व और भविष्य की अंतरिक्ष यात्रा तक की सभी जानकारियां इस गैलरी में समाहित की गई हैं। इस गैलरी का भ्रमण करके मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है और अहमदाबाद में हमारी अपनी साइंस सिटी में इतनी भव्य सुविधा उपलब्ध होने पर मुझे गर्व महसूस होता है। भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं। यह लिखते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि आप वास्तव में सभी के ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं।

श्री दीपेश केडिया, आईएएस (भारतीय प्रशासनिक सेवा)

स्पेस गैलरी की यह मेरी पहली यात्रा थी और इसका अनुभव मेरी कल्पना से भी कहीं अधिक अद्भुत रहा। मैं यह अनुशंसा करता हूं कि राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को प्लैनेटेरियम का अनुभव अवश्य कराया जाना चाहिए, क्योंकि यह पूरे ब्रह्मांड के इतिहास को अत्यंत संक्षिप्त और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है। यहां के शिक्षकों ने भी विभिन्न जटिल विषयों को बहुत सरलता से समझाया। इस गैलरी के विकासकर्ताओं को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

श्री गिरीश कामदार – आगंतुक

साइंस सिटी की हमारी यात्रा का अनुभव अत्यंत अद्भुत रहा। बच्चों के लिए यह एक बहुत ही शैक्षणिक और ज्ञानवर्धक स्थान है। मेरा मानना है कि प्रत्येक माता-पिता को अपने बच्चों के साथ यहां अवश्य आना चाहिए, ताकि वे सीखने के साथ-साथ विज्ञान को नजदीक से समझ और अनुभव कर सकें।

श्री चंद्रेश रांदेरिया : आगंतुक

हमने हाल ही में गुजरात साइंस सिटी का भ्रमण किया और हमारा अनुभव अत्यंत अद्भुत रहा। यहां की सभी सुविधाएं उत्कृष्ट थीं तथा पूरे परिसर का संचालन बहुत व्यवस्थित ढंग से किया गया था। विशेष रूप से 5D शो वास्तव में अद्भुत और मनोरंजक था। हम वहां के दो स्टाफ सदस्यों का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहते हैं, जिन्होंने अत्यंत विनम्रता के साथ हमारी सहायता की। उनके सहयोग और मार्गदर्शन से हमारा अनुभव और भी सुखद बन गया। इस उत्कृष्ट आतिथ्य के लिए हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। परिवार और मित्रों के साथ घूमने के लिए यह उत्तम स्थान है।

श्री आशीष – आगंतुक

यहां प्रवेश करने से पहले हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यह स्थान इतना अद्भुत होगा। किसी को भी यहां आने का अवसर नहीं चूकना चाहिए। यहां से हमें बहुत कुछ नया जानने और सीखने को मिलता है।

आज गुजरात साइंस सिटी नए भारत के विकास विजन का एक जीवंत उदाहरण है। दूरदर्शी नेतृत्व, सुदृढ़ योजना और निरंतर विकास के परिणामस्वरूप साइंस सिटी ने सफलता की जो गौरवगाथा रची है, वह गुजरात मॉडल की एक गौरवशाली उपलब्धि है।गुजरात साइंस सिटी, अहमदाबाद द्वारा जारी जानकारी में उल्लेख किया गया है कि आने वाले समय में नई गैलरियों और आधुनिक परियोजनाओं के साथ साइंस सिटी विज्ञान प्रसार और जनजागरूकता के क्षेत्र में और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा लाखों युवाओं को विज्ञान के प्रति प्रेरित करती रहेगी।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने जेतलसर, वांसजालिया वेरावल, सोमनाथ, सासण गिर एवं जूनागढ़ क्षेत्र का किया व्यापक संरक्षा निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने 13 एवं 14 जून, 2026 को भावनगर मंडल के अंतर्गत विभिन्न रेलवे स्टेशनों तथा रेलखंडों का व्यापक निरीक्षण कर यात्री सुविधाओं, आधारभूत संरचना, संरक्षा, स्वच्छता एवं विकास कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान उनके साथ भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

अपने दौरे की शुरुआत में महाप्रबंधक ने वांसजालिया रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया तथा प्लेटफॉर्म, यात्री सुविधाओं एवं रेलकर्मियों के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने स्टेशन संचालन, आधारभूत संरचना के रखरखाव, स्वच्छता, यात्री सुविधाओं तथा कर्मचारियों के कल्याण संबंधी व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने रेलकर्मियों से संवाद करते हुए उनके समर्पण एवं कार्यनिष्ठा की सराहना की तथा सुरक्षित एवं निर्बाध रेल संचालन के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। इसके पश्चात श्री पाण्डेय ने जेतलसर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और यात्री सुविधाओं, स्टेशन परिसर की स्वच्छता, सर्कुलेटिंग एरिया तथा समग्र रखरखाव का अवलोकन किया। उन्होंने यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं सुविधाजनक यात्रा अनुभव उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक व्यवस्थाओं की समीक्षा की तथा स्टेशन परिसर को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित बनाए रखने पर विशेष बल दिया।

जेतलसर प्रवास के दौरान महाप्रबंधक ने जेतपुर के माननीय विधायक श्री जयेशभाई विठ्ठलभाई रादड़िया एवं अन्य जनप्रतिनिधियों से भेंट कर विभिन्न रेल संबंधी विषयों एवं क्षेत्र में चल रही विकासात्मक परियोजनाओं पर चर्चा की। बैठक में यात्री सुविधाओं के विस्तार, रेल अवसंरचना के उन्नयन तथा भविष्य की विकास योजनाओं पर विचार-विमर्श किया गया। महाप्रबंधक ने जेतलसर स्टेशन पर मीडिया प्रतिनिधियों से भी संवाद किया तथा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी साझा की। उन्होंने यात्री सेवाओं के उन्नयन, आधारभूत संरचना के विकास तथा रेलवे सुविधाओं के आधुनिकीकरण के लिए पश्चिम रेलवे द्वारा किए जा रहे सतत प्रयासों पर प्रकाश डाला।

जल्द चलेगी बीकानेर - साबरमती नई ट्रेन सेवा रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव दिखाएंगे हरी झंडी

गुजरात और राजस्थान के लोगों को जल्द ही एक नई रेल सेवा का उपहार मिलने जा रहा है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव शीघ्र ही अमदावाद(साबरमती)–बीकानेर(लालगढ़) एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाएंगे। यह नई रेल सेवा गुजरात के अमदावाद और राजस्थान के बीकानेर के बीच सीधा, तेज और सुविधाजनक रेल संपर्क उपलब्ध कराएगी।

यह नई एक्सप्रेस ट्रेन पश्चिम भारत के दो प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों को आपस में जोड़ेगी। अब गुजरात के प्रसिद्ध साबरमती रिवरफ्रंट, मोढेरा सूर्य मंदिर, पाटन की रानी की वाव और अमदावाद की समृद्ध विरासत का आनंद लेना हो या फिर राजस्थान के भव्य जूनागढ़ किला, करणी माता मंदिर, लालगढ़ पैलेस तथा बीकानेर की समृद्ध संस्कृति और मरुस्थलीय पर्यटन का अनुभव करना हो, यह नई एक्सप्रेस यात्रियों को सुविधाजनक और सीधी रेल कनेक्टिविटी उपलब्ध कराएगी।

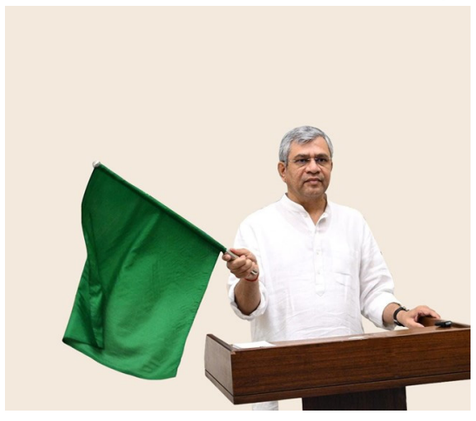

नई ट्रेन गुजरात के अमदावाद, महेसाणा, पाटन और बनासकांठा जिलों तथा राजस्थान के जालौर, बालोतरा, जोधपुर, नागौर और बीकानेर जिलों को लाभ पहुंचाएगी। ट्रेन के प्रमुख ठहराव साबरमती, महेसाणा, पाटन, भीलड़ी, धानेरा, रानीवाड़ा, मारवाड़ भीनमाल, मोदरान, जालौर, मोकलसर, समदड़ी, लूणी, जोधपुर, गोटन, मेड़ता रोड, नागौर, नोखा, बीकानेर और लालगढ़ होंगे।

लगभग 740 किलोमीटर की दूरी तय करने वाली यह नई एक्सप्रेस सेवा के प्रारंभ होने के साथ ही बीकानेर से अमदावाद तक दैनिक एक्सप्रेस रेल संपर्क स्थापित हो जाएगा। इस दैनिक ट्रेन सेवा से विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, व्यापारियों और पर्यटकों को विशेष सुविधा प्राप्त होगी। यह ट्रेन दोनों राज्यों के क्षेत्रीय विकास, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को नई ऊर्जा प्रदान करेगी।

हाल ही में केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने राजस्थान के लोगों को अनेक महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं और सेवाओं का उपहार दिया है। कुछ दिन पहले ही उन्होंने जोधपुर से विभिन्न रेल सेवाओं को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया तथा जैसलमेर में कोच केयर कॉम्पलेक्स का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर जोधपुर–दिल्ली कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस को 20 कोचों के साथ संचालित करने की सौगात दी गई, वहीं साबरमती–जोधपुर एक्सप्रेस का विस्तार जैसलमेर तक किया गया। साथ ही जालोर से मंत्री जी द्वारा भुज–जालोर–पाली-दिल्ली नई रेल सेवा को भी हरी झंडी दिखाई गई, जिससे जालोर,पाली और आसपास के क्षेत्रों को पहली बार दिल्ली और भुज से सीधा रेल संपर्क प्राप्त हुआ।

शौर्य, सम्मान और एकता का अद्भुत संगम बना महाराणा प्रताप जयंती समारोह

सूरत। वीरता, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक Maharana Pratap की 484वीं जयंती पर सूरत में निकली भव्य शौर्य रैली ने राजपूताना परंपरा, सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक गौरव का अनूठा संदेश दिया। राजस्थान राजपूत समाज द्वारा आयोजित इस विशाल रैली का गोडादरा क्षेत्र में राजस्थान युवा संघ ने अत्यंत उत्साह, श्रद्धा और सम्मान के साथ स्वागत किया। पूरे आयोजन के दौरान वातावरण देशभक्ति, शौर्य और समाज के गौरवपूर्ण इतिहास की स्मृतियों से सराबोर रहा।

जैसे ही शौर्य रैली गोडादरा क्षेत्र में निर्धारित स्वागत स्थल पर पहुंची, वहां पहले से मौजूद समाजबंधुओं, युवाओं, महिलाओं और बच्चों ने जोरदार स्वागत किया। स्वागत स्थल को विशेष रूप से सजाया गया था और रैली के आगमन के साथ ही उत्साह अपने चरम पर पहुंच गया। राजस्थान युवा संघ के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने जेसीबी मशीनों के माध्यम से पुष्पवर्षा कर महाराणा प्रताप के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की। आकाश से बरसते पुष्पों के बीच "महाराणा प्रताप अमर रहें" के जयघोष पूरे क्षेत्र में गूंज उठे, जिससे माहौल गौरव और उत्साह से भर गया।

कार्यक्रम केवल महाराणा प्रताप की जयंती तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज के उन व्यक्तित्वों को भी याद किया गया जिन्होंने संगठन और समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर राजस्थान राजपूत समाज के पूर्व अध्यक्ष एवं राजस्थान युवा संघ के अध्यक्ष रहे स्वर्गीय विक्रम सिंह को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समाज के युवाओं ने "विक्रम सिंह अमर रहें" और "महाराणा प्रताप अमर रहें" के गगनभेदी नारों के साथ उनके योगदान को याद किया। इन नारों ने उपस्थित लोगों में सामाजिक एकता, सम्मान और प्रेरणा का भाव और अधिक प्रबल कर दिया। रैली में बड़ी संख्या में समाज के विभिन्न वर्गों की सहभागिता देखने को मिली। युवा पीढ़ी जहां हाथों में ध्वज और बैनर लेकर उत्साहपूर्वक चल रही थी, वहीं महिलाओं और बच्चों ने भी पूरे जोश के साथ भागीदारी निभाई। समाज के वरिष्ठजनों ने महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका संघर्ष केवल मेवाड़ की रक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि वह स्वाभिमान, स्वतंत्रता और राष्ट्रभक्ति के सर्वोच्च आदर्शों का प्रतीक था। उनका जीवन आज भी समाज और राष्ट्र को प्रेरणा देता है। कार्यक्रम के दौरान सेवा और सामाजिक दायित्व की भावना भी प्रमुख रूप से दिखाई दी। राजस्थान युवा संघ के कार्यकर्ता प्रमोद शर्मा और उनकी टीम द्वारा शीतल जल सेवा तथा आइसक्रीम वितरण की विशेष व्यवस्था की गई थी। गर्म मौसम के बीच इस सेवा कार्य की उपस्थित लोगों ने मुक्त कंठ से सराहना की। समाज के अनेक सदस्यों ने कहा कि ऐसे आयोजन केवल सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का माध्यम नहीं होते, बल्कि समाज में सेवा, सहयोग और भाईचारे की भावना को भी मजबूत करते हैं। इस अवसर पर राजस्थान राजपूत समाज के युवा अध्यक्ष पिंटू बन्ना और उनकी कार्यकारिणी का दुपट्टा पहनाकर सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने युवा नेतृत्व की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि नई पीढ़ी समाज की परंपराओं और मूल्यों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है, जो भविष्य के लिए अत्यंत सकारात्मक संकेत है। पूरे कार्यक्रम के दौरान राजपूताना संस्कृति, परंपरा और गौरव की झलक स्पष्ट दिखाई दी। शौर्य रैली ने न केवल महाराणा प्रताप के आदर्शों को स्मरण कराया, बल्कि समाज को एक सूत्र में बांधने का भी कार्य किया। आयोजन के अंत में उपस्थित लोगों ने समाज की एकता, संगठन की मजबूती और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया। शौर्य रैली और स्वागत समारोह ने यह संदेश दिया कि इतिहास के महान व्यक्तित्व केवल स्मरण करने के लिए नहीं होते, बल्कि उनके आदर्श वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को दिशा देने का कार्य करते हैं।

श्रम न्यायालय ने वीएमसी को झटका दिया: अवैध रूप से बर्खास्त किए गए ड्राइवर को 5.92 लाख का मुआवजा देने का आदेश

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। श्रम न्यायालय ने वडोदरा नगर निगम (वीएमसी) के वाहन पूल शाखा में ड्राइवर के पद पर कार्यरत एक कर्मचारी की अवैध बर्खास्तगी के मामले में निगम को करारा झटका दिया है। ड्राइवर को लगातार 513 दिनों तक और एक वर्ष में 240 से अधिक दिनों तक काम करने के बावजूद बर्खास्त कर दिया गया था। श्रम न्यायालय ने निगम के इस निर्णय को कानून के विरुद्ध घोषित करते हुए एक ऐतिहासिक आदेश जारी किया है, जिसमें पीड़ित कर्मचारी को मुआवजे के रूप में 5,92,444 रुपये (लगभग 5.92 लाख रुपये) और अदालत के खर्च के रूप में 10,000 रुपये अगले 30 दिनों के भीतर भुगतान करने का आदेश दिया गया है।

याचिकाकर्ता मोहम्मद रफीक अल्लाहरख़्ख़ा शेख ने वर्ष 1992 में वडोदरा नगर निगम में अस्थायी चालक के रूप में काम शुरू किया था। हालांकि, निगम अधिकारियों ने श्रम कानून का उल्लंघन करते हुए, उन्हें बिना किसी पूर्व सूचना या वित्तीय मुआवजे के 1 अक्टूबर, 2002 को अचानक नौकरी से बर्खास्त कर दिया। मोहम्मद रफीक ने इस अन्याय के खिलाफ श्रम न्यायालय का रुख किया।

इस मामले में कानूनी लड़ाई लंबी चली। 2009 में दायर संदर्भ मामले में, श्रम न्यायालय ने 2016 में याचिकाकर्ता को 20% बकाया वेतन (पिछला वेतन) के साथ बहाल करने का आदेश दिया था। निगम ने श्रम न्यायालय के इस आदेश को उच्च न्यायालय में चुनौती दी।

लेकिन उच्च न्यायालय ने निगम की अर्जी खारिज कर दी। उच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद, प्रशासन ने 2018 तक आवेदक को नौकरी नहीं दी। बाद में, जब वह बेरोजगार था, तो उसे स्थायी कर्मचारी के रूप में कोई लाभ नहीं दिया गया। अंततः, आवेदक को 2017 में अपने बकाया 9.21 लाख रुपये की वसूली के लिए अर्जी दाखिल करनी पड़ी।

श्रम न्यायालय ने दोनों पक्षों के तर्कों और साक्ष्यों पर विचार करने के बाद निगम के तर्कों को पूरी तरह से खारिज कर दिया। यद्यपि उच्च न्यायालय ने नगरपालिका की अपील को खारिज कर दिया, फिर भी उसने निम्नलिखित निर्णय देते हुए मुआवजे का आदेश दिया और कंपनी को कानूनी निधि से वंचित कर दिया।

नायलॉन उद्योग पर मंडराया संकट, आयात प्रतिबंधों के प्रस्ताव से हजारों एमएसएमई और लाखों रोजगार दांव पर

सूरत। देश के सबसे बड़े सिंथेटिक वस्त्र केंद्र सूरत से केंद्र सरकार के समक्ष एक महत्वपूर्ण आर्थिक चिंता उठाई गई है। नायलॉन एफडीवाई (फुली ड्रॉन यार्न) पर प्रस्तावित एंटी-डंपिंग ड्यूटी, न्यूनतम आयात मूल्य (एमआईपी), बेसिक कस्टम ड्यूटी (बीसीडी) अथवा अन्य संभावित आयात प्रतिबंधों के खिलाफ उद्योग जगत ने एकजुट होकर आवाज बुलंद की है। सचिन इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड ने प्रधानमंत्री कार्यालय को भेजे विस्तृत ज्ञापन में चेतावनी दी है कि यदि ऐसे प्रतिबंध लागू किए गए तो इसका असर केवल आयात-निर्यात तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि देशभर के हजारों सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों, बुनकरों, प्रोसेसिंग इकाइयों और लाखों श्रमिकों की आजीविका पर गंभीर रूप से पड़ेगा।

सूरत का टेक्सटाइल उद्योग वर्षों से देश की आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण आधार रहा है। यहां की हजारों इकाइयां नायलॉन यार्न पर आधारित उत्पादन करती हैं और घरेलू बाजार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों की मांग भी पूरी करती हैं। ऐसे में उद्योग से जुड़े संगठनों का कहना है कि यदि आयातित नायलॉन एफडीवाई यार्न पर अतिरिक्त शुल्क लगाया गया या आयात को सीमित किया गया तो उत्पादन लागत में भारी वृद्धि होगी। इसका सीधा असर तैयार वस्त्रों की कीमतों, प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और निर्यात पर पड़ेगा।

सचिन इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसाइटी के सचिव मयूर जे. गोलवाला द्वारा प्रधानमंत्री कार्यालय को भेजे गए पत्र में कहा गया है कि वर्तमान समय में टेक्सटाइल उद्योग पहले ही वैश्विक आर्थिक चुनौतियों, बढ़ती उत्पादन लागत, श्रम व्यय और बाजार में मांग की अनिश्चितता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे माहौल में यदि कच्चे माल की कीमतें और बढ़ा दी गईं तो हजारों छोटी एवं मध्यम इकाइयों के लिए अस्तित्व का संकट खड़ा हो जाएगा।

उद्योग जगत का तर्क है कि एंटी-डंपिंग ड्यूटी का उद्देश्य घरेलू उद्योगों को अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचाना होता है, लेकिन इस मामले में स्थिति अलग है। सोसाइटी ने दावा किया है कि देश के प्रमुख नायलॉन उत्पादक किसी आर्थिक संकट में नहीं हैं। इसके विपरीत, उन्होंने हाल के वर्षों में अच्छा लाभ अर्जित किया है और अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने की योजनाएं भी घोषित की हैं। ऐसे में यह कहना उचित नहीं होगा कि घरेलू उद्योग को बचाने के लिए आयात पर अतिरिक्त प्रतिबंध आवश्यक हैं।

ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया है कि भारतीय बाजार की मांग अत्यंत विविधतापूर्ण है। विभिन्न गुणवत्ता, ग्रेड और तकनीकी विशिष्टताओं वाले नायलॉन यार्न की आवश्यकता होती है, जिनकी पूर्ति केवल घरेलू उत्पादन से संभव नहीं है। यही कारण है कि कई भारतीय निर्माता स्वयं भी विभिन्न प्रकार के यार्न का आयात करते हैं। उद्योग प्रतिनिधियों का कहना है कि आयात पर कठोर प्रतिबंध लगाने से बाजार में

आवश्यक कच्चे माल की उपलब्धता प्रभावित होगी और उत्पादन श्रृंखला में व्यवधान पैदा होगा।

सूरत के उद्योगपतियों ने इस मुद्दे का एक और महत्वपूर्ण पहलू सामने रखा है। उनका कहना है कि यदि आयात पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं तो कुछ बड़े घरेलू उत्पादकों को बाजार में अनुचित लाभ मिल सकता है। इससे प्रतिस्पर्धा घटेगी और एकाधिकार अथवा कार्टेलाइजेशन जैसी स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। उद्योग संगठनों का मानना है कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक होती है, जबकि सीमित आपूर्ति और बढ़ी हुई कीमतें अंततः छोटे उद्योगों और उपभोक्ताओं दोनों को नुकसान पहुंचाती हैं।

सोसाइटी के अनुसार देशभर में लगभग 3,000 से अधिक डाउनस्ट्रीम उपयोगकर्ता सीधे तौर पर आयातित नायलॉन यार्न पर निर्भर हैं। इनमें बुनकर, टेक्सटाइल प्रोसेसर, फैब्रिक निर्माता, निर्यातक और अनेक लघु उद्योग शामिल हैं। इन इकाइयों में लाखों श्रमिक कार्यरत हैं, जिनकी आजीविका इस उद्योग से जुड़ी हुई है। यदि कच्चे माल की लागत अचानक बढ़ जाती है तो उत्पादन घटेगा, ऑर्डर कम होंगे और रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

उद्योग जगत का यह भी कहना है कि वर्तमान परिस्थितियों में अनेक उद्यमी खुलकर अपनी बात रखने से हिचकिचा रहे हैं। उन्हें आशंका है कि आपूर्ति और व्यावसायिक संबंधों पर इसका असर पड़ सकता है। परिणामस्वरूप उद्योग की वास्तविक चिंताएं और समस्याएं पूरी तरह सामने नहीं आ पा रही हैं। ऐसे में सचिन इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसाइटी ने सरकार से आग्रह किया है कि निर्णय लेने से पहले व्यापक स्तर पर सभी हितधारकों की राय ली जाए।

विशेषज्ञों का मानना है कि भारत का टेक्सटाइल क्षेत्र देश के सबसे बड़े रोजगार सृजन क्षेत्रों में से एक है। यह क्षेत्र करोड़ों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराता है। यदि कच्चे माल की उपलब्धता प्रभावित होती है तो इसका असर केवल उत्पादन इकाइयों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी टेक्सटाइल वैल्यू चेन प्रभावित होगी। इससे निर्यात प्रतिस्पर्धा भी कमजोर पड़ सकती है और वैश्विक बाजार में भारतीय उत्पादों की स्थिति पर असर पड़ सकता है।

सूरत के उद्योग संगठनों ने केंद्र सरकार से अपील की है कि नायलॉन एफडीवाई यार्न पर प्रस्तावित एंटी-डंपिंग ड्यूटी, न्यूनतम आयात मूल्य या अन्य आयात प्रतिबंधों को लागू करने से पहले उनके दूरगामी आर्थिक परिणामों का गंभीरता से आकलन किया जाए। उनका कहना है कि किसी भी नीति का उद्देश्य केवल कुछ कंपनियों को लाभ पहुंचाना नहीं, बल्कि पूरे उद्योग, रोजगार और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के हितों की रक्षा करना होना चाहिए।

फिलहाल उद्योग जगत की निगाहें केंद्र सरकार के अगले कदम पर टिकी हुई हैं। यदि सरकार इस मामले में संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है तो लाखों लोगों की आजीविका सुरक्षित रह सकती है। लेकिन यदि बिना व्यापक परामर्श के कठोर प्रतिबंध लागू किए गए तो इसका असर देश के सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्रों में से एक पर पड़ सकता है। यही कारण है कि सूरत से उठी यह आवाज अब राष्ट्रीय आर्थिक बहस का विषय बनती जा रही है।

अपनी सास की व्रज के 84 कोस की परिक्रमा करने की इच्छा पूरी करने के लिए, बहू ने उन्हें अपने सिर पर उठाया और सेवा और समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत किया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। आज जब समाज में सास-बहू के बीच अनेक विवाद और गलतफहमियां देखने को मिलती हैं, तब यह कहानी इन रोजमर्रा के झगड़ों से बिलकुल उलट है, यानी एक बहू की बहू होने का फर्ज निभाने की कहानी। देश के प्रसिद्ध पवित्र स्थान वृंदावन में एक महिला ने 84 कोस की परिक्रमा करके सेवा, समर्पण और निष्ठा की मिसाल कायम की। उन्होंने (बहू ने) अपनी सास की इच्छा पूरी की और उन्हें अपने सिर पर उठाकर 84 कोस की परिक्रमा की। वृद्धावस्था और शारीरिक कमजोरी के कारण सास चल नहीं सकती थीं, इसलिए पैदल 84 कोस की यात्रा करना उनके लिए संभव नहीं था। हालांकि, व्रज की परिक्रमा करने की उनकी दिली इच्छा लंबे समय से थी।

बहू ने अपनी सास की इस इच्छा को पूरा करने का निश्चय कर लिया था। उसने अपनी सास को एक टब में बिठाया और उनके सिर पर अंडा रखकर परिक्रमा शुरू कर दी, मानो टब को किसी घड़े की तरह उठा रही हो। यह दृश्य कई भक्तों के लिए भावुक कर देने वाला था। जब लोगों को पता चला कि यह महिला अपनी सास की इच्छा पूरी करने के लिए इतनी भीषण गर्मी में उन्हें अपने सिर पर उठाकर व्रज यात्रा की कठिन तपस्या कर रही है, तो उन्होंने बहू के प्रति सम्मान व्यक्त किया। यही तो सास-बहू का सच्चा प्रेम है, जिसमें माँ-बेटी का रिश्ता महसूस होता है।

विदेशी पूंजी की वापसी से बढ़ी बाजार की चिंता, जून में एफपीआई ने निकाले 62,853 करोड़ रुपये

नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार एक बार फिर विदेशी निवेशकों की भारी बिकवाली के दबाव में दिखाई दे रहा है। जून के पहले दो सप्ताह में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) द्वारा की गई बड़ी निकासी ने बाजार की धारणा को प्रभावित किया है। लगातार बिकवाली का यह दौर केवल एक महीने तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे वर्ष 2026 में विदेशी निवेशकों का रुख भारतीय बाजारों के प्रति काफी सतर्क बना हुआ है। विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक स्तर पर बढ़ती अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनाव और आर्थिक चुनौतियों के कारण विदेशी निवेशक जोखिम वाले बाजारों में अपना निवेश कम कर रहे हैं।

नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के आंकड़ों के अनुसार, जून माह के पहले 12 दिनों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार से 62,853 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की है। यह निकासी केवल 10 कारोबारी सत्रों के दौरान हुई, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि विदेशी निवेशक फिलहाल भारतीय इक्विटी बाजार में आक्रामक रूप से निवेश करने के बजाय मुनाफावसूली और जोखिम कम करने की रणनीति अपना रहे हैं।

वर्ष 2026 की शुरुआत से ही विदेशी निवेशकों का रुख नकारात्मक बना हुआ है। जनवरी में एफपीआई ने 35,962 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी। इसके बाद मार्च में विदेशी निवेशकों ने रिकॉर्ड स्तर पर लगभग 1.17 लाख करोड़ रुपये के शेयर बेच दिए, जिसने बाजार में व्यापक चर्चा को जन्म दिया। अप्रैल में 60,847 करोड़ रुपये और मई में 32,963 करोड़ रुपये की निकासी दर्ज की गई। हालांकि फरवरी में 22,615 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश आया था, लेकिन वह भी पूरे वर्ष की बिकवाली की भरपाई नहीं कर सका। परिणामस्वरूप वर्ष 2026 में विदेशी निवेशकों की कुल शुद्ध बिकवाली 3.09 लाख करोड़ रुपये के स्तर को पार कर चुकी है, जो भारतीय पूंजी बाजार के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत माना जा रहा है।

विश्लेषकों का कहना है कि विदेशी निवेशकों की यह रणनीति केवल भारत तक सीमित नहीं है। दुनिया भर के उभरते बाजारों में निवेश का माहौल फिलहाल चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। अमेरिका और यूरोप में आर्थिक वृद्धि की गति को लेकर चिंता, महंगाई के दबाव, ब्याज दरों के भविष्य को लेकर अनिश्चितता और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों ने वैश्विक निवेशकों को अधिक सतर्क बना दिया है। ऐसे माहौल में बड़े संस्थागत निवेशक अपेक्षाकृत सुरक्षित परिसंपत्तियों की ओर रुख कर रहे हैं।

पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव भी विदेशी निवेशकों की चिंता का बड़ा कारण बनकर उभरा है। क्षेत्र में जारी सैन्य गतिविधियों और राजनीतिक अस्थिरता ने वैश्विक वित्तीय बाजारों में अस्थिरता बढ़ा दी है। निवेशकों को आशंका है कि यदि तनाव और बढ़ता है तो इसका असर वैश्विक व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और आर्थिक विकास पर पड़ सकता है। यही कारण है कि कई विदेशी फंड जोखिम वाले निवेशों में अपनी हिस्सेदारी घटाने में जुटे हैं।

कच्चे तेल की कीमतें भी बाजार के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। ब्रेंट क्रूड की कीमत 90 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बनी रहने से आयातक देशों पर अतिरिक्त दबाव बढ़ सकता है। भारत दुनिया के सबसे बड़े तेल आयातकों में शामिल है और तेल की कीमतों में वृद्धि का सीधा असर देश के आयात बिल, चालू खाता घाटे और महंगाई पर पड़ता है। यदि तेल की कीमतें लंबे समय तक ऊंचे स्तर पर बनी रहती हैं तो इससे आर्थिक गतिविधियों पर भी असर पड़ सकता है। विदेशी निवेशक इसी जोखिम को ध्यान में रखते हुए अपनी निवेश रणनीति में बदलाव कर रहे हैं।

बाजार विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक और अन्य प्रमुख केंद्रीय बैंकों की ब्याज दर नीतियां विदेशी निवेश प्रवाह को प्रभावित कर रही हैं। यदि विकसित देशों में ब्याज दरें ऊंची बनी रहती हैं तो वैश्विक निवेशकों को वहां बेहतर और अपेक्षाकृत सुरक्षित रिटर्न मिलने की संभावना रहती है। ऐसे में उभरते बाजारों से पूंजी का बाहर जाना स्वाभाविक माना जाता है। भारत जैसे बाजारों में निवेश करने वाले कई बड़े फंड फिलहाल वैश्विक परिस्थितियों का आकलन कर रहे हैं और नए निवेश के बजाय सतर्क रुख अपना रहे हैं।

हालांकि विदेशी निवेशकों की बिकवाली के बावजूद भारतीय शेयर बाजार पूरी तरह कमजोर नहीं पड़ा है। इसका एक प्रमुख कारण घरेलू संस्थागत निवेशकों और खुदरा निवेशकों की लगातार भागीदारी है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय निवेशकों की संख्या तेजी से बढ़ी है और म्यूचुअल फंडों के माध्यम से नियमित निवेश का प्रवाह बाजार को मजबूत आधार प्रदान कर रहा है। कई अवसरों पर घरेलू निवेशकों ने विदेशी बिकवाली के दबाव को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की दीर्घकालिक आर्थिक संभावनाएं अब भी मजबूत हैं। देश की विकास दर, बुनियादी ढांचे में निवेश, विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार, डिजिटल अर्थव्यवस्था की प्रगति और उपभोक्ता मांग जैसे कारक भारतीय बाजार को आकर्षक बनाए रखते हैं। हालांकि अल्पकालिक अवधि में वैश्विक घटनाक्रम और विदेशी निवेशकों की रणनीति बाजार की दिशा को प्रभावित कर सकती है।

वर्तमान परिस्थितियों में निवेशकों को सतर्क और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी जा रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण बाजार में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है, लेकिन मजबूत आर्थिक आधार वाले क्षेत्रों और गुणवत्ता वाली कंपनियों में निवेश दीर्घकाल में बेहतर अवसर प्रदान कर सकता है।

गोशाला से वैश्विक पहचान तक: उत्तर प्रदेश ने रचा आत्मनिर्भरता और गोसंवर्धन का नया अध्याय

लखनऊ। कभी केवल धार्मिक आस्था और ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा मानी जाने वाली गौवंश आधारित अर्थव्यवस्था आज उत्तर प्रदेश में विकास, रोजगार और वैश्विक पहचान का नया माध्यम बन चुकी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य सरकार ने गो संरक्षण को केवल सामाजिक और सांस्कृतिक विषय तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार और निर्यात से जोड़कर एक नए मॉडल के रूप में विकसित किया है। यही कारण है कि आज उत्तर प्रदेश का गोसंवर्धन मॉडल देश के कई राज्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है, जबकि यहां निर्मित गो-आधारित उत्पाद सात समंदर पार अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी पहचान बना रहे हैं।

उत्तर प्रदेश ने बीते कुछ वर्षों में गोवंश संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में जिस प्रकार की योजनाएं लागू की हैं, उनका असर अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। राज्य में संचालित गोशालाएं केवल आश्रय केंद्र नहीं रह गई हैं, बल्कि वे उत्पादन, अनुसंधान और ग्रामीण रोजगार के केंद्र के रूप में विकसित हो रही हैं। देसी गायों से प्राप्त गोबर, गोमूत्र, दूध, घी और पंचगव्य के माध्यम से अनेक प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं, जिनकी मांग देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लगातार बढ़ रही है।

आज उत्तर प्रदेश में लगभग 200 प्रकार के गो-आधारित उत्पादों का निर्माण किया जा रहा है। इनमें पंचगव्य घृत, ब्राह्मी घृत, गोमूत्र अर्क, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक औषधियां, धूपबत्ती, जैविक खाद, हवन सामग्री, औषधीय साबुन, शतधौता घृत, हर्बल काजल और विभिन्न स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद शामिल हैं। प्राकृतिक जीवनशैली और आयुर्वेद के प्रति विश्वभर में बढ़ते आकर्षण ने इन उत्पादों के लिए नए बाजार तैयार किए हैं। अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर, मलेशिया, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और थाईलैंड जैसे देशों तक इनकी पहुंच बन चुकी है।

विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक स्तर पर रासायनिक उत्पादों के दुष्प्रभावों को लेकर बढ़ती चिंता ने लोगों को प्राकृतिक और जैविक विकल्पों की ओर आकर्षित किया है। भारतीय आयुर्वेद और पंचगव्य आधारित उत्पाद इसी कारण तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश ने इस अवसर को पहचानते हुए गो-आधारित उत्पादों के उत्पादन और विपणन को संगठित स्वरूप प्रदान किया है। राज्य सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह मानी जा रही है कि उसने गो संरक्षण को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ा। पहले जहां गोशालाओं को केवल सेवा और संरक्षण का केंद्र माना जाता था, वहीं अब उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। गोबर से जैविक खाद, गोमूत्र से औषधीय उत्पाद और पंचगव्य से स्वास्थ्यवर्धक सामग्री तैयार कर स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर पैदा किए गए हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित हुए हैं और बड़ी संख्या में महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से इस अभियान से जुड़ रही हैं।

इस परिवर्तन की एक प्रेरक कहानी गाजियाबाद के असीम रावत की भी है। सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में सफल करियर छोड़कर उन्होंने देसी गायों के संरक्षण और गो-आधारित उत्पादों के निर्माण को अपना जीवन उद्देश्य बनाया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेरणा से शुरू हुई उनकी पहल आज 'हेता' नामक ब्रांड के रूप में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच चुकी है। असीम रावत का मानना है कि यदि वैज्ञानिक अनुसंधान, गुणवत्ता नियंत्रण और आधुनिक विपणन तकनीकों को अपनाया जाए तो गो-आधारित उद्योग ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकता है।

उनकी सफलता ने देशभर के युवाओं को भी प्रेरित किया है। आज अनेक शिक्षित युवा पारंपरिक कृषि और पशुपालन को आधुनिक उद्यमिता के साथ जोड़कर नए व्यवसाय विकसित कर रहे हैं। इससे यह धारणा भी बदल रही है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था केवल खेती तक सीमित है। गो-आधारित उद्योग अब रोजगार, नवाचार और निर्यात का नया क्षेत्र बनकर उभर रहा है।

उत्तर प्रदेश का यह मॉडल अब अन्य राज्यों के लिए भी अध्ययन और प्रशिक्षण का विषय बन गया है। गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और गोवा सहित 15 से अधिक राज्यों के लोग यहां आकर गो संरक्षण और गो-आधारित उद्योगों की कार्यप्रणाली सीख रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें देसी नस्लों के संरक्षण, उत्पाद निर्माण, विपणन और आर्थिक प्रबंधन की जानकारी दी जाती है।

पशुपालन विभाग के अपर मुख्य सचिव मुकेश मेश्राम के अनुसार राज्य सरकार उन्नत देसी नस्लों के संरक्षण को विशेष प्राथमिकता दे रही है। साहीवाल, गिर, गंगातीरी और थारपारकर जैसी उच्च उत्पादकता वाली देसी नस्लों के पालन को बढ़ावा देने के लिए 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी प्रदान की जा रही है।

पीली धातु की चमक फिर बढ़ी, सर्राफा बाजार में लौटी मजबूती

नई दिल्ली। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं, निवेशकों की सुरक्षित निवेश की बढ़ती प्रवृत्ति और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से मिले सकारात्मक संकेतों के बीच घरेलू सर्राफा बाजार में सोमवार को सोना और चांदी दोनों की कीमतों में उल्लेखनीय तेजी दर्ज की गई। पिछले सप्ताह आई गिरावट के बाद सप्ताह की शुरुआत मजबूत रुख के साथ हुई, जिससे निवेशकों और कारोबारियों के बीच नई चर्चा शुरू हो गई है। देश के प्रमुख शहरों में सोने के दाम नए उच्च स्तरों के करीब पहुंच गए हैं, जबकि चांदी ने भी मजबूती दिखाते हुए बाजार में अपनी चमक बरकरार रखी है।

सर्राफा कारोबारियों के अनुसार अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमती धातुओं की मांग बढ़ने, डॉलर में उतार-चढ़ाव और वैश्विक तनावपूर्ण परिस्थितियों के कारण निवेशकों का रुझान फिर से सोने और चांदी की ओर बढ़ा है। यही कारण है कि घरेलू बाजार में भी इन धातुओं की कीमतों में तेजी देखने को मिली। विशेष रूप से विवाह सीजन और आगामी त्योहारों को देखते हुए खुदरा मांग में भी धीरे-धीरे सुधार दिखाई दे रहा है।

राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोने की कीमत 1 लाख 49 हजार 230 रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंच गई, जबकि 22 कैरेट सोना 1 लाख 36 हजार 800 रुपये

प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार करता रहा। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई सहित कोलकाता, बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर जैसे प्रमुख शहरों में भी सोने के दाम लगभग समान स्तर पर बने रहे। इन शहरों में 24 कैरेट सोना 1 लाख 49 हजार 80 रुपये प्रति 10 ग्राम तथा 22 कैरेट सोना 1 लाख 36 हजार 650 रुपये प्रति 10 ग्राम के आसपास दर्ज किया गया। दक्षिण भारत के प्रमुख बाजार चेन्नई में सोने की कीमत सबसे अधिक रही। यहां 24 कैरेट सोना 1 लाख 51 हजार 200 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1 लाख 38 हजार 600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंच गया। विशेषज्ञों का कहना है कि क्षेत्रीय मांग, परिवहन लागत और स्थानीय कर संरचना के कारण विभिन्न शहरों में कीमतों में थोड़ा अंतर देखने को मिलता है।

सोने के साथ-साथ चांदी ने भी निवेशकों का ध्यान आकर्षित किया। दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी का भाव बढ़कर 2 लाख 60 हजार रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया। उद्योगों में बढ़ती मांग, इलेक्ट्रॉनिक्स और सौर ऊर्जा क्षेत्र में चांदी की खपत तथा निवेशकों की खरीदारी ने इसकी कीमतों को समर्थन दिया है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले समय में चांदी की औद्योगिक मांग और बढ़ सकती है, जिससे इसके दामों में और उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

हालांकि मौजूदा तेजी के बावजूद पिछले सप्ताह का रुख अलग रहा था। बीते सप्ताह 24 कैरेट सोने की कीमत में लगभग 6 हजार 680 रुपये प्रति 10 ग्राम की गिरावट दर्ज की गई थी। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी करीब 3 हजार 400 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हुआ था। चांदी की कीमतों में भी लगभग 5 हजार रुपये प्रति किलोग्राम की कमजोरी देखी गई थी। लेकिन सप्ताह की शुरुआत में आई नई तेजी ने बाजार का माहौल बदल दिया है और निवेशकों के बीच फिर से उत्साह पैदा किया है।

विश्लेषकों का कहना है कि सोने और चांदी की कीमतें केवल घरेलू मांग और आपूर्ति से प्रभावित नहीं होतीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम भी इन पर गहरा असर डालते हैं। अमेरिकी डॉलर की मजबूती या कमजोरी, केंद्रीय बैंकों की ब्याज दर नीतियां, वैश्विक महंगाई, कच्चे तेल की कीमतें और भू-राजनीतिक तनाव जैसे कारक कीमती धातुओं की दिशा तय करते हैं। जब दुनिया में आर्थिक या राजनीतिक अनिश्चितता बढ़ती है तो निवेशक जोखिम वाले निवेशों से निकलकर सोने जैसे सुरक्षित विकल्पों की ओर रुख करते हैं, जिससे कीमतों में तेजी आती है।

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले दिनों में निवेशकों की नजर अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीतियों, वैश्विक आर्थिक आंकड़ों और अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों पर बनी रहेगी।

राम मंदिर विवाद पर सियासत तेज, अखिलेश बोले आस्था के नाम पर सवालों से बच नहीं सकती सरकार

आगरा। अयोध्या के राम मंदिर में कथित दान राशि अनियमितता के मामले को लेकर उत्तर प्रदेश की राजनीति में नया विवाद खड़ा हो गया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष Akhilesh Yadav ने इस मुद्दे पर भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि धार्मिक संस्थाओं से जुड़े पुजारियों और सेवादारों की जांच कराना सनातन परंपराओं और आस्था का अपमान है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपनी प्रशासनिक विफलताओं और जनसमस्याओं से ध्यान हटाने के लिए ऐसे मुद्दों को अलग दिशा देने का प्रयास कर रही है।

रविवार को आगरा में पत्रकारों से बातचीत के दौरान अखिलेश यादव ने कहा कि राम मंदिर करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है और उससे जुड़े मामलों में अत्यंत संवेदनशीलता तथा पारदर्शिता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि किसी प्रकार की अनियमितता की शिकायत सामने आती है तो उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए, लेकिन जिस प्रकार मंदिर से जुड़े पुजारियों और धार्मिक सेवकों को संदेह के घेरे में खड़ा किया जा रहा है, उससे समाज में गलत संदेश जा रहा है।

उन्होंने कहा कि सनातन परंपरा में पुजारियों और धार्मिक सेवकों का विशेष सम्मान रहा है। ऐसे में प्रशासनिक स्तर पर की जाने वाली कार्रवाई का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे धार्मिक भावनाएं आहत न हों। उनके अनुसार सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि जांच का वास्तविक उद्देश्य क्या है और किन तथ्यों के आधार पर कार्रवाई की जा रही है।

अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार की आर्थिक नीतियों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों का सामना कर रही है। डॉलर के मुकाबले रुपये की स्थिति को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि इसका सीधा असर आम लोगों की जेब पर पड़ता है। आयातित वस्तुएं महंगी होती हैं, उत्पादन लागत बढ़ती है और अंततः महंगाई का बोझ जनता को उठाना पड़ता है।

उन्होंने आरोप लगाया कि लगातार बढ़ती महंगाई के कारण आम परिवारों का घरेलू बजट प्रभावित हो रहा है। खाद्य पदार्थों, ईंधन, बिजली और रोजमर्रा की जरूरतों की वस्तुओं के दाम बढ़ने से मध्यम वर्ग और गरीब वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार को महंगाई नियंत्रित करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए, लेकिन वर्तमान में जनता को राहत देने की बजाय केवल दावे किए जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार की योजनाओं पर टिप्पणी करते हुए सपा प्रमुख ने स्मार्ट सिटी और स्मार्ट मीटर परियोजनाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जिन योजनाओं को विकास के मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया था, वे अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकीं। उनके अनुसार कई शहरों में बुनियादी सुविधाओं की स्थिति अब भी संतोषजनक नहीं है, जबकि स्मार्ट मीटर को लेकर भी जनता के बीच अनेक शिकायतें सामने आ रही हैं।

भ्रष्टाचार और प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर भी उन्होंने सरकार पर हमला बोला। अखिलेश यादव ने कहा कि प्रदेश में कई विभागों से जुड़ी शिकायतें लगातार सामने आ रही हैं, लेकिन उनके समाधान की दिशा में अपेक्षित गंभीरता दिखाई नहीं दे रही। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रशासनिक तंत्र पर नियंत्रण कमजोर हुआ है और जनता को विभिन्न स्तरों पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

विपक्षी एकता के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि भाजपा को चुनौती देने के लिए विपक्षी दलों का एकजुट रहना आवश्यक है। उन्होंने संकेत दिया कि आगामी चुनावी मुकाबलों को ध्यान में रखते हुए विपक्ष अपनी रणनीति तैयार कर रहा है। उनके अनुसार भाजपा देशभर में चुनावी तैयारी कर रही है और विपक्षी दल भी उसी गंभीरता के साथ संगठनात्मक स्तर पर काम कर रहे हैं।

इंडिया गठबंधन के भविष्य को लेकर पूछे गए सवाल पर उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।